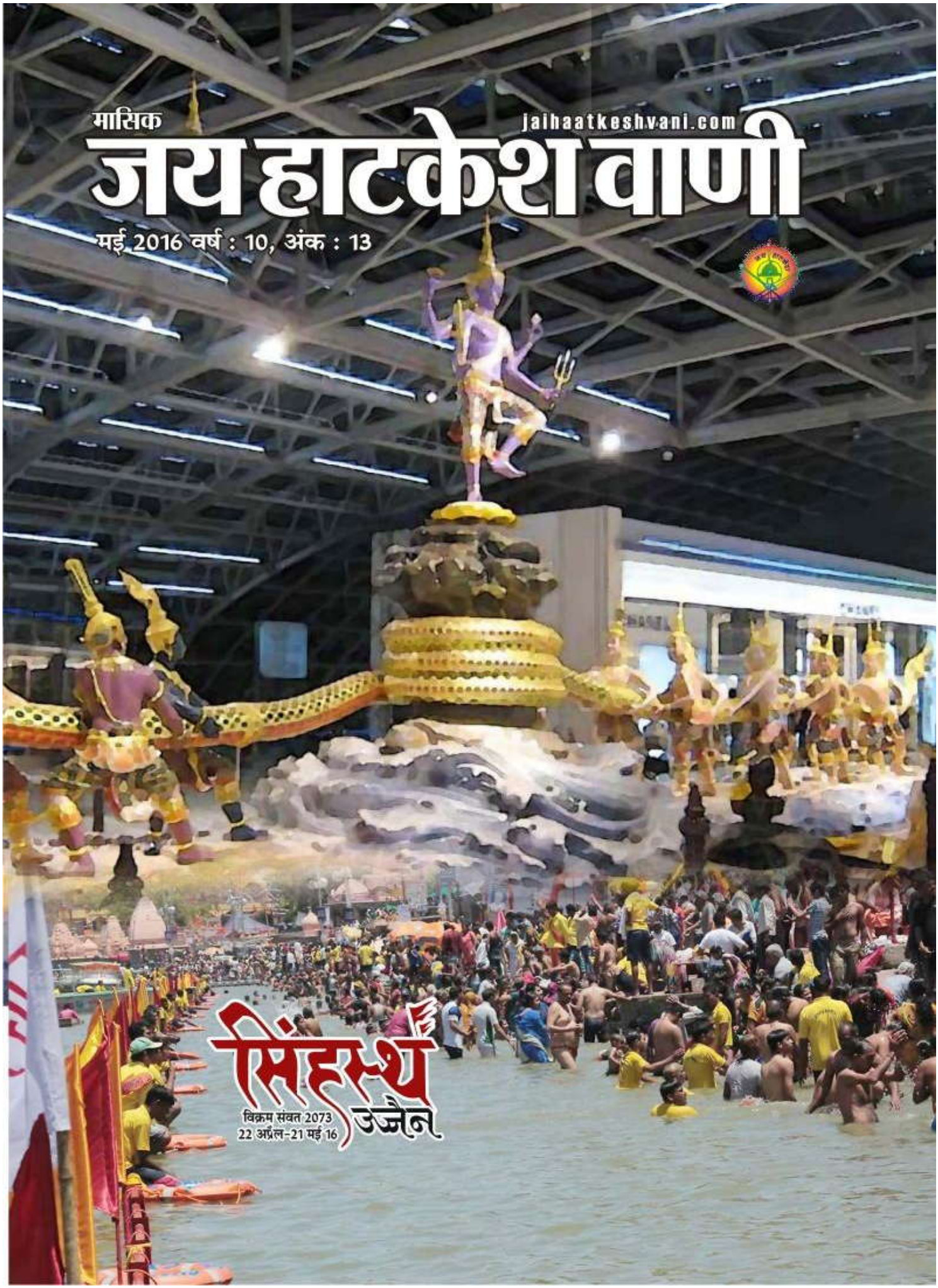
मासिक
जय हाटकेश वाणी
jaihaatkeshvani.com
मई 2016 वर्ष : 10, अंक : 13
सिंहस्थ
उज्जैन
विक्रम संवत 2073
22 अप्रैल-21 मई 16

With Best Compliments From :

Gurukul

C-106, Talwandi, Kota
Ph.: 0744-2406781
A Chain of Exculsive Girl's Hostel

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा
सौ.आभा विजयशंकर मेहता

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

वाट्सअप पर प्रकाशन सामग्री भेजने की सुविधा

मासिक जय हाटकेश वाणी में प्रकाशन हेतु सामग्री प्रतिमाह 20 तारीख तक अवश्य भेज देवें। यदि ईमेल पर प्रकाशन सामग्री भेजते हैं तो प्राप्ति के सम्बंध में मनीष शर्मा मो. 9926285002 से कन्फर्म अवश्य कर लें।

अपने फोटो एवं प्रकाशन सामग्री आप वाट्सएप पर भी भेज सकते हैं इस हेतु ये नम्बर सेव कर लेवें।

मो. 8878171414, 9826146388

'वाणी' वितरण में सहभागी बनें

डाक एवं पोस्ट की अव्यवस्था के चलते कई स्थानों पर जय हाटकेश वाणी पहुँच नहीं पाती है, यदि आपको निर्धारित समय तक पत्रिका न मिल पाए तो अपना नाम पता निम्नलिखित मोबाइल नं. पर मैसेज करें- मो. 9425063129.

वाणी प्राप्ति हेतु निम्न स्थानों पर स्थानीय स्तर पर सम्पर्क किया जा सकता है, जहां पत्रिका की अतिरिक्त प्रतियां भेजी जाती है। इन स्थानों पर स्वयं जाकर भी प्राप्त कर सकते हैं।

भोपाल - श्री सुभाष व्यास- अरेरा कॉलोनी फोन 0755-2463303

रतलाम- श्री ओम त्रिवेदी- टी.आय.टी. रोड़ फोन 07412-230222

उज्जैन- श्री संजय जोशी इंदिरा नगर मो. 9425917540

(इनके अलावा नागर बहुल नगरों में जो समाजजन पत्रिका वितरण में सहयोगी बनना चाहते हैं तो वे हमसे अवश्य सम्पर्क कर लेवें। धन्यवाद

जय हाटकेश वाणी

मूल्य 10/-रुपये

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो. 9826095995, 9926285002

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

सकारात्मकता की जरूरत है...

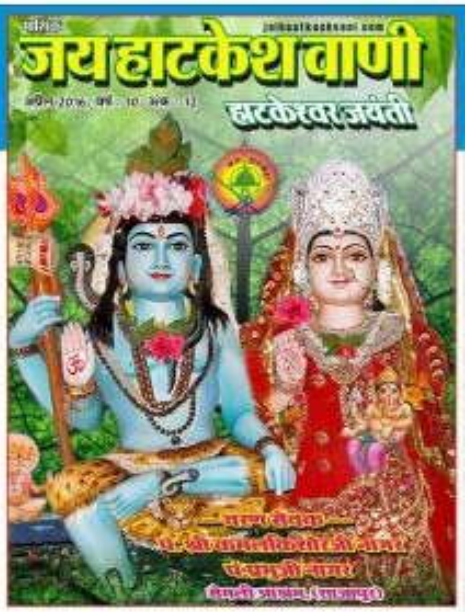

हमारे समाज में सकारात्मकता का अभाव होने से उन्नति बाधित हो रही है। दरअसल सामाजिक स्तर पर जो आयोजन किए जा रहे हैं उस सम्बन्ध में व्यापक जनमत लिया जाना चाहिए। समाज के विभिन्न संगठन सर्वे कर यह जानने का प्रयास करें कि वास्तव में समाजजन चाहते क्या हैं?

उनकी रुचि किस तरह के कार्यक्रमों में है, क्या भाषणबाजी, जैसी गतिविधियाँ अब उबाऊ नहीं हो गई है। व्यर्थ के भाषण अर्थात समाजसुधार की चर्चा केवल बोल-वचन तक ही सीमित रह जाए तो उससे क्या लाभ है? समाज के लिये क्या लाभप्रद है उन्नति कारक है इसके लिए व्यापक जनमत तैयार करना चाहिए। समाज के पदाधिकारी केवल अपने स्तर पर कार्यक्रमों की रूपरेखा न बनाएं उसके लिए रायशुमारी अवश्य करें। आयोजनों में परिवारों के सभी सदस्यों के रुचिकर कार्यक्रमों का समावेश होना चाहिए। साथ ही समाजजनों में सकारात्मकता होना चाहिए वे आलोचना या टांग खिंचाई के बजाय आयोजनों एवं गतिविधियों का पूर्ण लाभ लें तथा उसे सफल बनाने का प्रयास करें। समाज में आज सकारात्मकता का अभाव है तथा सामाजिक संगठनों के प्रति विश्वसनीयता एवं प्रभाव घटा है। समाजजनों में अपने संगठनों एवं पदाधिकारियों पर पर्याप्त विश्वास एवं सम्मान होना चाहिए तथा संगठन भी यह प्रयास करें कि वे उन्हीं गतिविधियों को प्राथमिकता दे जिससे समाज का अधिकाधिक लाभ हो सके।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

मैं .....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड़, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार),
इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com
E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

हाटकेश्वर जयंती पर समाज के सभी परिवारों को अपने अन्य सभी कार्य छोड़कर सबसे पहले भगवान हाटकेश्वर की आराधना में जुटना चाहिए। इस सम्बन्ध में अन्य समाजों को हम देखें तो उनकी एकजुटता अभूतपूर्व दिखाई देती है। यदि हम संगठनात्मक प्रयासों में अपनी रुचि नहीं दिखाते हैं तो स्वयं का एवं समाज का नुकसान ही करते हैं।

संगठित होकर उन्नति करने का संदेश...

गुरु हो या भगवान वे इंसान को संगठित होकर उन्नति करने तथा सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय का महामंत्र ही देते हैं। सिख समुदाय गुरुनानक, गुरु गोविन्दसिंह जैसे मार्गदर्शकों का अनुगामी है, अग्रवाल समाज महाराजा अग्रसेन की छत्रछाया में संगठित होकर निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। बोहरा समाज अपने धर्मगुरु डॉ.सैय्यदना साहब के माध्यम से तथा जैन समाज भगवान महावीर के अनुयायी के रूप में विशेष दिन एकत्रित होकर आयोजन कर एक-दूसरे से परिचय बढ़ाते हैं। यदि कहा जाए कि अग्रवाल समाज की समृद्धि का मुख्य कारण उनका एकजुट होकर व्यवसाय में सहयोग करना भी है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वे प्रतिवर्ष महाराजा अग्रसेन की जयंती पर एकत्र होते हैं तथा भव्य समारोह कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। उनके संगठन की शहर के साथ-साथ मोहल्ला स्तर पर तथा कपल ग्रुप एवं सोश्यल ग्रुप से समाज का प्रत्येक सदस्य जुड़ा रहता है।

सामाजिक स्तर पर एकता का वे अपने व्यवसाय में खूब लाभ उठाते हैं और सम्पन्नता उनके कदम चूमती है। नागर ब्राह्मण समाज के कुलदेवता भगवान हाटकेश्वर हैं तथा प्रतिवर्ष उनकी जयंती मनाई जाती है, समाज में विभिन्न स्थानों पर आयोजन होते हैं तथा इनका मुख्य उद्देश्य समाज को संगठित करने का होता है। संगठन से शक्ति बढ़ती है तथा जब सामाजिक स्तर पर एक-दूसरे का सहयोग यदि तन-मन-धन से किया जाए तो समाज की प्रगति एवं सम्पन्नता को कोई रोक नहीं सकता। हाटकेश्वर जयंती पर समाज के सभी परिवारों को अपने अन्य सभी कार्य छोड़कर सबसे पहले भगवान हाटकेश्वर की आराधना में जुटना चाहिए। इस सम्बन्ध में अन्य समाजों को हम देखें तो उनकी एकजुटता अभूतपूर्व दिखाई देती है। यदि हम संगठनात्मक प्रयासों में अपनी रुचि नहीं दिखाते हैं तो स्वयं का एवं समाज का नुकसान करते हैं। होना यह चाहिए कि हम इस खास दिन शानदार पोषाख पहनकर अत्यन्त उत्साहित, प्रसन्न एवं श्रद्धावान होकर भगवान हाटकेश्वर के पूजन अर्चन, शोभायात्रा एवं समारोहों में हिस्सा लें तथा इसे शक्ति प्रदर्शन तो नहीं कहा जाए, परन्तु हमारी श्रद्धा भक्ति एवं एकता को देखकर अन्य समाज भी हमसे प्रेरित हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए। भगवान की भक्ति हम दिखावे के लिए नहीं करते, परन्तु हमारी भक्ति भावना स्वयं दिव्य होना चाहिए। वह भगवान हाटकेश्वर को प्रसन्न करने के उद्देश्य से तथा एकजुट होकर करना चाहिए। अंततः भगवान की प्रसन्नता से ही समाज में शांति, सौहार्द एवं सम्पन्नता के दर्शन हो सकेंगे।

-संगीता-दीपक शर्मा

दकियानुसी परम्पराओं पर विराम लगे

हिन्दी संस्कृति में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक कई संस्कार होते हैं। बच्चे के माँ के गर्भ में आते ही इनकी शुरुआत हो जाती है, इसमें से एक रस्म है गोद भराई की। इस रस्म में गर्भस्थ शिशु व माँ को अपने परिचितों व परिवार के बड़ों का प्यार व सदा स्वस्थ व प्रसन्न रहने का आशीर्वाद मिलता है। अक्सर परिवारों में देखा है गोद भराई की रस्म उस महिला रिश्तेदार से करवाई जाती है जो पुत्रवती हो, जिन महिलाओं के केवल लड़कियाँ ही हैं या जिस महिला के बच्चे ही न हों उनसे गोद भरवाई नहीं करवाई जाती। हम कितने ही आधुनिक बन जायें मगर आज भी हममें पुत्र प्राप्ति की दबी हुई इच्छा रहती है। आज समाज में हम देख रहे हैं कि माता पिता की दिल से सेवा बेटियाँ ही कर रही हैं, कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाय तो बेटे प्राय: सेवा मजबूरी में करते हैं। सबकुछ देखते समझते हुए भी पुत्र पाने की लालसा खत्म नहीं हो रही।

यहाँ यह विचारणीय है कि जिस महिला के बच्चे नहीं हैं, वह गोद क्यों नहीं भर सकती --क्या जिस महिला को ईश्वर ने मातृत्व का सुख नहीं दिया उसकी ममता भी खत्म हो जाती है --वास्तविकता तो यह है कि उन महिलाओं में इतनी ममता होती है कि वो अपने पराये देखे बगैर सब बच्चों पर बराबर अपना स्नेह बरसाती है। इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता कि गोद कौन भर रहा है, होता वही है जो ईश्वर चाहता है। हम सभी के परिवारों में ऐसे खुशियों के पल आते रहते हैं, ध्यान रखिये हमारी खुशियों में गलती से भी किसी का दिल ना आहत हो जाय।

-आशा नागर (अतिथि सम्पादक)
होशंगाबाद

सिंहस्थ 2016

प्रचार के बजाय सुविधा की जरूरत

उज्जैन में 22 अप्रैल से 21 मई तक आयोजित सिंहस्थ महाकुम्भ में जो परिस्थितियां निर्मित हो रही है, उनसे कुछ सबक शासन एवं प्रशासन को लेना चाहिए। सिंहस्थ महाकुम्भ के बारे में देशभर से प्रकाशित कैलेण्डरों में जानकारी प्रकाशित की गई है, साथ ही यह ऐसा दिव्य अवसर है कि धर्मप्रेमी जनता स्वयं ही याद रखकर इस महत्वपूर्ण अवसर पर उज्जैन आने का मन बना चुकी है। सिंहस्थ के बारे में देश भर में प्रचार के लिए जो बड़ी राशि खर्च की गई, उसकी जरूरत नहीं थी, कई बार अत्यधिक प्रचार भी हानिकारक हो जाता है। मेले में सबने तैयारी उस प्रचार के मान से की, जबकि अधिक प्रचार का नकारात्मक संदेश यह गया कि बहुत भीड़ पड़ेगी, श्रद्धालुओं ने सोचा कि अधिक भीड़ के भय से हम वहां नहीं जाएं। सरकार को केवल यात्रियों की सुविधा जुटाने पर ध्यान देना चाहिए। यह एक दिव्य आयोजन है तथा अभी तक ऐसे आयोजन प्रचार के बजाय धार्मिक आस्थाओं के कारण सफल होते आए हैं। प्रथम शाही स्नान के दिन जो सख्तियां की गई, उसका भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

21वीं सदी में प्रचार और आवागमन के भरपूर साधन उपलब्ध है, परन्तु निश्चित रूप से धार्मिक आस्था कहीं-न-कहीं पीछे छूट गई है। पहले के जमाने में प्रचार एवं आवागमन के साधन भले ही कम थे, परन्तु धार्मिक आस्था के आगे सारी असुविधाएं एवं परेशानी तुच्छ प्रतीत होती थी। अमर होने की इच्छा है तो सुविधाओं की जरूरत नहीं है। यह धार्मिक आस्था आंतरिक मामला है, यह ऊपर से थोपी जाने वाली अवस्था नहीं है। सरकार ने प्रचार पहले शुरु किया तथा व्यवस्थाएं बाद में जुटाना शुरु किया, जबकि उन्हें केवल यात्रियों को सुविधाएं एवं व्यवस्थाएं देने पर ही पूरा ध्यान केन्द्रित करना चाहिए था। अब तो सिंहस्थ महाकुंभ शुरु हो गया है तथा अब केवल सबक ही सिखा जा सकता है। वह यह है कि हम अपने घर में अच्छी व्यवस्थाएं जुटा लें, मेहमानों को स्वप्रेरणा से आने दें, उन्हें बुलाने के लिए विज्ञापन की जरूरत नहीं है। यदि हमारे प्रति प्रेम की भावना होगी तो वह स्वयं आएंगे, अन्यथा बुलाने पर भी नहीं आएंगे।

-सौ.आभा मेहता

मानव-प्रण

आदरणीय श्री सुरेशचन्द्रजी दवे काका साहब को समर्पित

मन निर्मल
तन निर्मल
प्रण निर्मल
क्लिष्ट डगर
असीम आस्थाओं से चेतन,
पथ में कंटक
उद्वेलित मन
हर्षित होकर पग-पग रख
पा जायेगा मंजिल।

दीप शिखा में आशाओं
की कल-कल
दीप शिखा में मानव का मन
दीप शिखा में पूर्ण धरा का,
तम छंट जायेगा, भय मिट जायेगा
हर्षित हो मानव मुस्काएगा।

-मुकेश नागर
नीमवाड़ी, शाजापुर
मो. 9424518080

योग एवं एक्यूप्रेशर शिविर का आयोजन

नागर मंडल संस्थान उदयपुर की ओर से समाज के सदस्यों के स्वास्थ्य संवर्द्धन की दृष्टि से पांच दिवसीय योग एवं एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन जेठियों का अखाड़ा गणगौर घाट पर किया गया। जिसमें राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षकों ने योग व एक्यूप्रेशर प्रशिक्षण दिया। शुभारंभ समारोह में संस्थान के अध्यक्ष डॉ.सत्यभूषण नागर ने अतिथियों का स्वागत किया तथा प्रशिक्षिकों का परिचय देते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज के इस मशीनी युग में व्यक्ति आराम तलबी की जिंदगी यापन करता है तथा अपने जीने के तरीको से अनेक बीमारियां डायबीटीज, हाई व लो ब्लड प्रेशर मोटापा, हार्ट प्रॉब्लम का शिकार हो जाता है। इन बीमारियों से बचने तथा जीवन को खुशहाल बनाने के लिये योग सबसे महत्वपूर्ण उपाय है। समापन समारोह में दोनों प्रशिक्षकों को शाल ओढ़ाकर प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्री गणेशलाल नागर, सूर्यकांत नागर, निर्मलकांत नागर, विनोद नागर, शरद नागर, विमल नागर, सुशील नागर, प्रजलेश नागर, संदीप नागर, प्रतीक नागर, श्रीमती रोहिणी नागर, पायल नागर, रेखा नागर, सोनल नागर, विनीता नागर, श्री विजय नागर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद सचिव श्री अजय नागर ने दिया।

नागर मंडल संस्थान, उदयपुर में निर्वाचन

नागर मंडल संस्थान उदयपुर (नागर ब्राह्मण समाज) के चुनाव में सर्व सम्मति से डॉ.सत्यभूषण नागर को अध्यक्ष, श्री अजय नागर सचिव, श्री सुशील नागर उपाध्यक्ष, श्री मुकेश नागर कोषाध्यक्ष, श्री प्रजलेश नागर उपसचिव, श्री संदीप नागर संगठनमंत्री, श्री कविता नागर प्रचार मंत्री, श्रीमती रोहिणी नागर सांस्कृतिक मंत्री, श्री शंकर नागर, श्री पीयूष नागर, श्री प्रतीक नागर कार्यकारिणी सदस्य चुने गये।

डॉ.सत्यभूषण नागर श्री अजय नागर

वैदिक एवं कर्मकांड की निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध

महर्षि दधिची वेद विद्यालय भदाना फाटा डेह रोड़ नागौर (राज.) प्रवेश प्रारम्भ मई 2016 शिक्षा- चारो वेद, सम्पूर्ण ज्योतिष, सम्पूर्ण कार्मकांड पूजन, भागवत आदि कथा का हिन्दी संस्कृत, अंग्रेजी में संगीतमय अध्ययन।

अध्ययन तरीका- प्राचीन सतयुग जैसा।

शुल्क- निःशुल्क भोजन, आवास, अध्ययन।

अवधि- 5 वर्ष

आयु- 8 से 16 वर्ष तक

छात्रवृत्ति- 50 हजार रु. प्रत्येक को।

सम्पर्क सूत्र- डॉ.महेश दाधीच दधिमथि ज्योतिष कार्यालय नया तेलीवाड़ा, नागौर

shrimdvvs@gmail.com

वाट्सअप नं. 09982298062,

फोन 8302151001

स्वास्थ्य सुरक्षा को समर्पित दो आयोजन

नागर समाज के 170 सदस्यों की चिकित्सा जाँच

कहावत है कि धन गया तो, कुछ नहीं, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और नैतिकता गई तो सब कुछ गया। वर्तमान समय में स्वास्थ्य को संभाले रखना महंगा हो गया है तथा इसी के मद्देनजर वडनगरा नागर चिकित्सा प्रकोष्ठ और वडनगरा नागर मंडल सभी नागरजनों को मेडिक्लेम जैसी पालिसियों की महत्ता समझाता रहता है।

श्री इन्द्रेश याज्ञिक, श्रीमती रागिनी जानी, डॉ.मेहता, डॉ.रुचिर, डॉ.मधूसुदन दवे और समाज के अन्य नवयुवकों के अथक प्रयास और श्रीमती नम्रता याज्ञिक लेब असिस्टेंट की बहुमूल्य सेवाओं को समाज कभी नहीं भूल सकता।

अहमदाबाद में डॉक्टरों से अपाईंटमेन्ट लेने में श्री जतिन त्रिवेदी और मेहुल याज्ञिक सहयोग कर देते हैं तथा प्रकोष्ठ तत्काल सहायता भी प्रदान करता है। समय-समय पर जाँच परीक्षण शिविर भी आयोजित होते हैं। इसी के तहत 9 अप्रैल 2016 को रियायती दरों पर बांसवाड़ा नागर समाज के प्रेरक डॉ.परेश जानी के मार्गदर्शन में श्री रामानी पेथालॉजी लैब (मोडासा) एवं युनीपाथ लेब अहमदाबाद से लिपीड प्रोफाईल, थायराईड, हिमोग्लोबीन, शुगर, किडनी, लीवर से सम्बंधित जाँच मात्र 560 रु. में घर बैठे उपलब्ध करवाई गई। समाज के 170 लोगों ने इसका लाभ लिया। अगले पड़ाव 17 अप्रैल 2016 को समाज की इन दोनों संस्थाओं ने पूरे बांसवाड़ा वासियों को नगर परिषद के रंगमंच हाल में श्री माधव जोशी, मुम्बई के उद्‌बोधन का लाभ लेने के लिए आमंत्रित किया। नगर परिषद् सभापति श्रीमती मंजुबाला पुरोहित, वडनगरा नागर मंडल के अध्यक्ष श्री दिलीप दवे, कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ.परेश जानी, मुख्य वक्ता श्री माधव जोशी का आकर्षण था। दोपहर 3.30 से 7.30 बजे तक उन्होंने बगैर दवाई इंजेक्शन के स्वस्थ और चुस्त बने रहने की कला बताई। इन दोनों आयोजनों से यह जाहिर हुआ कि स्वास्थ्य के प्रति जागरुक रहें तथा नियमित परीक्षण करवाते रहें, परन्तु स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए योग-प्राणायाम, व्यायाम को ही अधिक महत्व दें।

-प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा मो. 08003063616

श्याम पिया 'मोरी रंग दे चुनरिया

सिद्धि विनायक मंदिर में फाग उत्सव सम्पन्न

देश में टीवी पर विज्ञापनों में फोग चल रहा है, परन्तु बांसवाड़ा में फागोत्सव अपने चरम पर रहता है। फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से ही सभी देवालय अपनी तैयारियों को मुर्तरूप देने लगते हैं तथा समस्त देवालयों में कार्यक्रम चर्चा के विषय बन जाते हैं। पूरा नागर समाज पूर्णिमा तक इसका आनन्द लेता रहता है। गणेश मंदिर में पिचकारी की बौछार, अबीर, गुलाल के साथ पंखुड़ियों की बरसात ऐसा जादुई और खुशनुमा वातावरण बना देता है, कि सब राधा और कृष्ण की भक्ति में रंगे नजर आते हैं। नागर मंडल की ओर से मनाए गए फागोत्सव में विशेष रूप से बुलाये गए श्री प्रजेन्द्र पंड्या ने 'होली खेलन आए गवरी के गणपत लाल' से सभी को भक्तिरस में डूबा दिया।

महेश्वर झा की 'सांवरिया नंदकिशोर हां किशोर मेरी साडी पर रंग डाल गयो से राधाकृष्ण की छिछोरी हरकत प्रस्तुत की तो कमल भाई याज्ञिक ने भी चुपके से आयो नंदलाल मेरी बईयां मरोड़ी, क्या करुं मैं लाज की मारी पिचकारी मोहे मुख पे मारी' गाया तो जय प्रकाश नागर ने चली चली पिचकारी सननन' का वर्णन किया, नयन नागर ने 'श्याम पिया मेरी रंग दे चुनरिया' हाटकेश झा ने 'लाल चुनरिया ओढ़ली मेरे बांके संवरिया' से समां बांधा तो मुकुंद नागर ने शास्त्रीय राग में ही होली का तराना छेड़ा तो भक्त झूम उठे, मिथिलेश नागर, सुरेश पंड्या और आमेटा ने भी अपनी प्रस्तुति दी। जलज पंचोली ने ढोलक, भरत याज्ञिक ने तबले तथा डॉ.संजय आमेटा ने हारमोनियम पर संगत की। पांच घंटे चले इस कार्यक्रम ने सभी का दिल मोह लिया।

-श्रीमती मंजू प्रमोदराय झा,
बांसवाड़ा मो. 09413947938

श्रीमती चेतना दवे की सेवानिवृत्ति पर सम्मान

श्रीमती चेतना हरीश दवे ने सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में इन्दौर और बांसवाड़ा की विभिन्न शाखाओं में 29 साल की सेवाएं देकर मुख्य केशियर पद से सेवानिवृत्ति प्राप्त की। वे चाहती तो अभी दो वर्ष अपना कार्यकाल बढ़ा सकती थी, मगर पारिवारिक जिम्मेदारी के आगे नतमस्तक हो गई। मुम्बई की सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में कार्यरत श्री हरीश दवे के साथ आपका विवाह हुआ था, मनुष्य बहुत कुछ सोचता है, परन्तु होता वही है जो विधाता चाहते हैं।

श्री हरीश दवे एक बेटे और बेटी को विरासत में देकर दुनिया को अलविदा कह गए और श्रीमती दवे का संघर्षकाल शुरु हो गया। उस समय के नियमों और उनकी शिक्षा के मान से वे चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी की अनुकंपा नियुक्ति ही प्राप्त कर सकती थी तथा चार वर्षों में योग्यता हांसिल कर ले तो केशियर या क्लर्क का स्थान प्राप्त कर सकती थी। सभी ने हौंसला दिलाया और वे संघर्षों से जुझ सकी। उन्होंने बेटे के साथ कुछ छोटा-मोटा व्यवसाय जमाने के उद्देश्य से उसी के उपयुक्त घर का चयन किया है।

चेतना दवे ने कम उम्र से ही जो दुःख झेले हैं वैसे किसी को न देखना पड़े। महिलाओं को पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने में बहुत कुछ परेशानियां झेलना पड़ती है। इसका एक अनुपम उदाहरण श्रीमती चेतना दवे से सिखना उचित है। उनके संघर्षपूर्ण जीवन को सलामी देने के साथ दायित्व का निर्वहन कैसे करना है यह विचार सभी के दिलों दिमाग जगाना में इसका उद्देश्य है। बाबा हाटकेश्वर चेतना दवे को अपने मकसद में कामयाब करें यही विनय है।

-श्रीमती मंजू प्रमोद राय झा, मो. 09413947938

स्थापना दिवस का समारोह नागर समाज के हवाले

राजस्थान स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर 29 मार्च 2016 को शासकीय कार्यक्रम हमारे समाज के अंबामाता मंदिर में भजन संध्या के रूप में मनाया गया। जिसमें कलाकार भी समाज के ही थे तथा नयन नागर के निर्देशन में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह अनायास ही तय कार्यक्रम था तथा उसे सम्पन्न करवाना समाज के भजन गायकों का कौशल ही कहा जाएगा। डी.एस.पी. के आग्रह पर भजन गायक अनूप जलोटा के शिष्य नयन पंचोली ने बांसवाड़ा आना स्वीकार किया तथा स्थान के रूप में अंबा माता मंदिर को वरीयता दी गई। तीन घंटे का कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

नागर समाज के लिए गरबा और भजन का कार्यक्रम आयोजित करना विज्ञापन में चर्चित नेस्ले कम्पनी के टू मिनट नूडल्स जैसा ही है। कार्यक्रम का आयोजक तैयार होता है तो साउंड, तबला और मार्गदर्शन के लिए नयन नागर तैयार रहते हैं। 24 घंटों तक भी यदि अविरल गरबा गाना हो तो गायक ही नहीं दर्शक और श्रोता भी मौजूद होते हैं। -बांसवाड़ा से श्रीमती मंजू प्रमोदराय झा

जयपुर में रुद्राभिषेक, महाआरती एवं रात्रिभोज सम्पन्न

जयपुर (राज.) में 20 अप्रैल 2016 को हाटकेश्वर मंदिर में नागर समाज की तरफ से प्रातः 7.30 बजे से रुद्राभिषेक, रुद्र पाठ एवं पूजन किया गया, जिसमें श्री निरंजन नागर, श्री प्रदीप नागर, श्री विनोद नागर, श्री अजय नागर ने सपत्निक रुद्राभिषेक एवं रुद्रपाठ पांच महापंडितों के सानिध्य में पूर्ण किया गया।

जिसके पश्चात् महाआरती में समाज के कई सदस्यों ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। पश्चात रात्रि में सामूहिक भोजन प्रसादी का आयोजन भी किया गया।

पूजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न

नागर सांस्कृतिक संस्था मुम्बई के तत्वावधान में भगवान हाटकेश्वर का पाटोत्सव 24 अप्रैल रविवार को स्थानीय रायल कोर्ट कांदिवली (ईस्ट) में आयोजित किया गया। प्रातः भगवान हाटकेश्वर का लघु रुद्राभिषेक पूजन किया गया। पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं दोपहर भोज के साथ समापन हुआ।

आगरा में परम्परागत तरीके से मनाई गई हाटकेश्वर जयंती

20 अप्रैल को आगरा में हाटकेश्वर जयंती का आयोजन सम्पन्न हुआ। प्रातः 9 बजे गणेश मंदिर से पूजन की शुरुआत हुई, जो रात्रि 8 बजे तक अन्य मंदिरों से होती हुई भगवान शिवजी के भव्य पूजन पर समापन हुई। सभी उपस्थित समाजजनों को आरती के बाद भोग एवं प्रसाद वितरित किया गया। आयोजन को सफल बनाने में समस्त समाज का सहयोग रहा। वैसे तो आगरा में प्रतिवर्ष हाटकेश्वर जयंती मनाई जाती है, परन्तु इस बार जय हाटकेश वाणी द्वारा वाट्सअप से समाचार भेजे जाने की सुविधा देने से तुरन्त सूचना देना आसान हुआ, बधाई एवं धन्यवाद!

प्रेषक- विनोद शर्मा

कोटा नागर समाज की महिलाओं द्वारा संगिनी किट्टी में गणगौर की थीम ।

नागर समाज कोटा में हाटकेश्वर जयंती पर चुनाव हुए जिसमें डॉ.मृणाल किंकर को अध्यक्ष और धर्मेन्द्र मेहता को सचिव सर्व सम्मति से नियुक्त किया गया । समाज के सदस्यों ने धूम धाम से जयंती मनाई और भोजन प्रसाद ग्रहण किया ।

अंश व्यास

1 मई 2015

जन्मदिन की बधाई

सुपुत्र- सौ.श्वेता-आशुतोष व्यास
शुभाकांक्षी- सौ.प्रेमलता-प्रमोद व्यास (दादी-दादा)
सौ.शारदा-मुकेश नागर (नानी-नाना)
समस्त व्यास एवं नागर परिवार मुम्बई एवं खजराना

नूतन गृह प्रवेश

आशीर्वाद

15 अप्रैल 2016 को आनंद-अर्चना शर्मा एवं अनिल-मोनिका शर्मा, रमेशचन्द्र शर्मा के नूतन गृह प्रवेश के अवसर पर त्रिवेणी मंडल इन्दौर द्वारा भजन सत्संग एवं पश्चात् स्नेह संध्या एवं व्यंजनों की बगिया में पधारकर रिश्तेदारों, समाजजनों, स्नेहीजनों ने 'आशीर्वाद' प्रदान किए। बधाई

श्री हाटकेश्वर धाम में हाटकेश्वर जयंती सम्पन्न

श्री हाटकेश्वर धाम में प्रातः 8 बजे हमारे इष्टदेव एवं पाताललोक के अधिपति देवाधिदेव भगवान हाटकेश्वर का अभिषेक, पूजन, अर्चन न्यास के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मेहता 'सुमन' एवं न्यासी सदस्य श्री किरणकांत मेहता ने सपत्निक किया। इस अवसर पर न्यास के कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र नागर, सचिव संतोष जोशी, नागर समाज के वरिष्ठ श्री योगेन्द्र त्रिवेदी के.के. मेहताजी, अजय प्रकाश मेहता, विशाल नागर, कैलाश रावल, मुकेश शर्मा, मनीष मेहता, संजय जोशी, हेमन्त मेहता, कन्हैयालाल मेहता, अजय नागर एवं अन्य गणमान्य माता बहनों ने आरती कर प्रसाद का लाभ प्राप्त किया।

श्री हाटकेश्वर धाम में कूलर भेंट
श्रीमती मीना लीलाधर मेहता मड़ावदा ने एक कूलर भेंट किया।

श्री हाटकेश्वर धाम में सिंहस्थ 2016 में श्रद्धालुओं हेतु शीतल जल (मशीन का ठंडा) की प्याऊ का लोकार्पण विधिवत पूजन, अर्चन कर किया गया।

श्री हाटकेश्वर धाम में श्री नारायणलालजी भीनमाल (जालोर, राज.) द्वारा हाटकेश्वर जयंती पर स्वयं की ओर से प्रसाद वितरण किया गया, तथा न्यास के लॉकर बनाने हेतु 1001 रुपये भेंट किए। इस अवसर पर न्यास की ओर से प्रतिक चिन्ह एवं दुपट्टे से वेदान्त आचार्य स्वामी श्री चेतनानंद महाराज भूरीवाले (पंजाब) के द्वारा सम्मान किया गया।

वेदान्त आचार्य स्वामी चेतनानंद महाराज भूरीवाले (पंजाब) द्वारा शाही स्नान के पूर्व श्री हाटकेश्वर धाम में ठहरे सभी श्रद्धालुओं के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। महाराज श्री द्वारा श्री हाटकेश्वर धाम के माध्यम से ड्रायफुट, केशर, दूध एवं वस्त्र कई संतों को भेंट किये। इस कार्य से अभिभूत होकर न्यास ने महाराज श्री का श्री हाटकेश्वर धाम का प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया।

श्री हाटकेश्वर जयंती पर म.प्र. नागर परिषद उज्जैन के द्वारा वरिष्ठजनों का सम्मान किया गया। श्रीमती रमा सुरेन्द्र मेहता का भी सम्मान किया गया।

श्री हाटकेश्वर जयंती पर परिषद के बैनर तले स्व.श्री कपिल मेहता की स्मृति में व्यवसाय एवं सामाजिक सेवाओं के लिए युवा समाजसेवी श्री संजय जोशी का सम्मान, श्री अजय प्रकाश मेहता एवं इनके परिवार द्वारा किया गया।

अभिमान को कभी भी अभिमान से नहीं जीता जा सकता- पं. अजय व्यास

मन्दसौर, अभिमान को कभी भी अभिमान से नहीं जीता जा सकता है। श्री हाटकेश्वर महादेव मंदिर मंदसौर में 27 मार्च को संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें इन्दौर के मानस प्रेमी पं.अजय नरेन्द्र व्यास व उनके अनुज पं.आवेश व्यास ने सुन्दरकाण्ड के प्रसंगों की व्याख्या सहित सुमधुर श्रीरामचरित मानस का गान किया। पं.अजय व्यासजी ने कथा में कहा कि सीता माता भक्ति, शक्ति एवं शान्ति का प्रतीक है। श्री रामचरित मानस हमारे दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ ग्रंथ है और मार्गदर्शन देता है। तन, मन, धन, मान, सम्मान प्राप्त करने की अचूक औषधी है। डॉ.राजेन्द्र नागर व श्रीमती अलका नागर द्वारा आयोजित इस गरिमामय कार्यक्रम में अ.भा. नागर ब्राह्मण युवा परिषद के अध्यक्ष श्री हेमन्त दुबे (शाजापुर) ने पं.अजय व्यास का परिचय कराया। आरती एवं प्रसादी के पश्चात श्री राजेन्द्र नागर ने सभी का आभार प्रकट किया।

संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा का समापन

मक्सी से समीपस्थ ग्राम बर्डिया सोन में स्थित दुर्गा मन्दिर में ग्रामीणों द्वारा संगीतमय भागवत कथा का आयोजन किया गया । भागवत कथा का पाठ पं. बालकृष्ण नागर, मक्सी द्वारा किया गया । भागवत कथा 09 अप्रेल से प्रारम्भ होकर 15 अप्रेल तक चली । प्रतिदिन कथाव्यास पं. नागर द्वारा दोपहर 12 से 3 के बिच भागवत का पाठ किया गया जिससे सुनने के लिये आस पास के क्षैत्र से बड़ी संख्या में भक्त प्रतिदिन उपस्थित हुए। पं. नागर के आकर्षक भजनों एवं मधुर आवाज के भागवत पाठ ने भक्तों का मन मोह लिया। भागवत कथा के समापन के पश्चात समस्त ग्रामीणों ने पं. नागर की भूरी भूरी प्रंशसा की । अन्तिम दिन निकले चल समारोह में भी बड़ी संख्या में भक्त उपस्थित हुए ।

नूतन गृह प्रवेश के साथ भागवत कथा भी सम्पन्न

देवास में मनमोहन-वरिष्ठ पत्रकार श्री हरिनारायण नागर ने गत 25 फरवरी 2016 को अपने नूतन गृह 306 'आशुतोष-निकेतन' सन सिटी 2 इन्दौर रोड़ देवास में अनुष्ठान के साथ प्रवेश पश्चात् नूतन गृह में ही 26 फरवरी 2016 से श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह प्रारम्भ हुआ, जिसका 3 मार्च 2016 को शोभायात्रा के साथ समापन हुआ। इस अवसर पर स्वजन एवं स्नेहीजन के सामूहिक भोज का आयोजन भी हुआ।

सौ.बिन्दूबाला-प्रदीप मेहता, इन्दौर

श्रीमती वरुणा प्रबल मेहता को स्वर्ण पदक, बधाई

रतलाम (नागरवास) निवासी श्रीमती पुष्पा-चन्द्रकांत मेहता की पुत्रवधू श्रीमती वरुणा-प्रबल मेहता को कोटा विश्वविद्यालय में एम.फील. की प्राविण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर माननीय महामहिम राज्यपाल द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। आप झालावाड़ निवासी श्रीमती भुवनेश्वरी-रामगोपालजी नागर की सुपुत्री हैं। इस उपलब्धि पर समस्त मेहता परिवार, नागर परिवार एवं समाजजन की ओर से बधाईयाँ।

-पुष्पा चन्द्रकांत मेहता
रतलाम, मो. 9229877731

चि.अनन्त नागर की शासकीय नौकरी में नियुक्ति

मेरे भांजे चिरंजीवी अनंत नागर सुपुत्र मंजू पंकज नागर (इन्दौर) ने शासकीय सेवा में चयन के पश्चात दिनांक 10-3-2016 को शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सेंधवा में लैब टेक्नीशियन के पद पर पदभार ग्रहण किया। इस विशेष दिन को स्मरणीय बनाये रखने के लिए अभिष्ट मुहूर्त के रूप में अपनी मम्मी श्रीमती मंजू नागर के जन्मदिन का चयन किया और इसी दिन पदभार ग्रहण कर उन्हें जीवन पर्यन्त स्मरणीय उपहार प्रदान किया। माता-पिता के शिक्षक होने व पारिवारिक संस्कार में मिले शिक्षा क्षेत्र के प्रति झुकाव से इन्होंने वर्तमान में शास. महाविद्यालय सेंधवा में नियुक्ति स्वीकार की। इन्होंने शास.संगीत महाविद्यालय इन्दौर से तबला पर दो वर्षीय कोर्स किया है। संस्कृत में रुझान के कारण संस्कृत भारती से जुड़कर संस्कृत संभाषण में प्रथम दीक्षा प्राप्त की। अनंत नागर अपनी सफलताओं का श्रेय भगवान हाटकेश्वर, माता-पिता के आशीर्वाद बहन आयुषी का स्नेह व सभी मित्रों व इष्टजनों की शुभकामनाओं को देते हैं।

स्मरण रहे, अनन्त नागर, स्व.श्रीमती कमलादेवी स्व.गणेशलालजी नागर (इन्दौर) के सुपौत्र व स्व.श्रीमती कमलादेवी स्व.श्री स्वरूपनारायणजी मेहता (मड़ावदा) के नाती हैं।

अनंत नागर को उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

-दीपक मेहता (मड़ावदा)

बेरछा में हाटकेश्वर अर्चन

बेरछा में स्थानीय नागर ब्राह्मण परिषद् बेरछा द्वारा अपने आराध्य देव भगवान हाटकेश्वर की बुधवार सुबह जयंती मनाई गई। मुख्य मार्ग स्थित हाटकेश्वर देवालय में समाज के महिला-पुरुष प्रात: ८ बजे एकत्रित होकर देवालय में भगवान हाटकेश्वर का आकर्षक श्रंगार कर महामस्तकाभिषेक किया गया जिसमें बेरछा मण्डी तथा ग्राम सहित, तिलावद खोरीया, बिकलाखेडी सहित अन्य ग्रामों से नागर समाजजन एकत्रित हुए। इसके पश्चात् समाज की वार्षिक बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर समाज के अध्यक्ष डॉ.मनोहरलाल शर्मा, डॉ.ओमप्रकाश नागर, डॉ.मनोज शर्मा, पूर्व जंप उपा. शलभ शर्मा, धीरेन्द्र रावल, राजकुमार शर्मा, बाबूलाल नागर, चक्रदत्त मेहता, सीपी नागर, बंटी नागर सहित सैंकडों समाजजन उपस्थित थे।

देवास में श्री हाटकेश्वर जयंती मनी

स्थानीय श्री कृष्णा नगर स्थित श्री हाटकेश्वर देवालय में नागर समाज के ईष्ट देव भगवान श्री हाटकेश्वर की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। मध्यान्ह 3:30 बजे से आचार्य पंडित श्री नरेंद्र शुक्ल ने भगवान श्री हाटकेश्वर पर गोदुग्ध से रुद्राभिषेक प्रारम्भ किया जो संध्या 7 बजे तक चला। पंडित श्री अनिल मेहता के सौजन्य से आयोजित उक्त समारोह के यजमान थे श्री लोकेन्द्र नागर। सायं सामूहिक महाआरती के पश्चात प्रसाद वितरण के साथ समारोह का समापन हुआ। इस अवसर पर पंडित श्री रमाशंकर नागर, पंडित श्री उपेन्द्र नारायण मेहता, डॉ. अवधबिहारी रावल, पत्रकार श्री हरिनारायण नागर सौ. शकुंतला नागर, श्रीमती आशा मेहता, श्रीमती वीणा पुराणिक, श्रीमती लीला नागर, सौ. सुशील मेहता, सौ. मृदुला मेहता सहित अनेक नागर जन उपस्थित थे।

-हरिनारायण नागर देवास

गाजे बाजे के साथ निकली भगवान हाटकेश्वर की भव्य शोभायात्रा

जय हाटकेश, जय हाटकेश के जय जय कारो से गूंजा पूरा नगर। इस भव्य शोभायात्रा में पुरूष वर्ग ने कुर्ता पायजामा एवं महिलाओ ने केशरिया साडी एवं जय हाटकेश के दुपट्टे पहनकर शामिल हुए नगर मे कई जगह शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया गया नागर ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष वीरेन्द्र व्यास एव नागर नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष संजय नागर (शिक्षा विभाग), नागर महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता मेहता ने बताया कि स्थानीय नागर ब्राह्मण समाज धर्मशाला हरायपुरा में संगीतमय सुन्दरकाण्ड पारायण आयोजित किया गया तथा श्री अम्बे माता मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा, श्री हाटकेश्वर भगवान का अभिषेक व हवन, परिवार प्रमुखो की बैठक में धार्मिक, सामाजिक एंव रचनात्मक कार्यक्रमो का समाजजनो ने निर्णय लिया। नागर ब्राह्मण समाज धर्मशाला हरायपुरा से गाजे बाजे के साथ भगवान हाटकेश्वर को पालकी में विराजीत कर भव्य शोभायात्रा प्रांरभ हुई जो नगर के नागनागिनी रोड, सोमवारिया बाजार, छोटा चौक, आजाद चौक, नई सडक, बस स्टेन्ड, टेशन चौराहा से होकर शोभायात्रा पुन: धर्मशाला पहुची शोभायात्रा के बाद नागर ब्राह्मण समाज हरायपुरा स्थित धर्मशाला परिसर में समाजजनो ने महाआरती कर महाप्रसादी में भी भाग लिया।

-राजेश नागर (पत्रकार),
शाजापुर, मो.९४२५०३४७२१

इन्दौर में प्रतिभा सम्मान एवं सांस्कृतिक संध्या सम्पन्न

इन्दौर में स्थानीय स्पूतनिक सभागृह में म.प्र. नागर परिषद शाखा इन्दौर के तत्वावधान में हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर प्रतिभा सम्मान समारोह एवं सांस्कृतिक संध्या सम्पन्न हुई।

हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर प्रातः 2 बजे खजराना स्थित हाटकेश्वर देवालय में श्रंगार पूजन एवं अभिषेक का कार्यक्रम हुआ। शाम को आयोजित साधारण सभा में विभिन्न इकाईयों म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद शाखा इन्दौर, नागर महिला मंडल, शिवांजलि पारमार्थिक ट्रस्ट एवं समस्त नागर विद्योत्तेजक ट्रस्ट के पदाधिकारियों क्रमशः अध्यक्ष श्री जयेश झा, सचिव श्रीमती सोनिया मंडलोई, अध्यक्ष डॉ.नरेन्द्र नागर ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। पश्चात् समस्त नागर विद्योत्तेजक फंड एवं ट्रस्ट के तत्वावधान में निम्नलिखित प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। श्रीमती अर्चना त्रिवेदी को केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी द्वारा सीबीएसई परीक्षा में विद्यार्थियों को उल्लेखनीय उपलब्धि दिलाने हेतु प्रशस्ति पत्र भेंट किया इस हेतु ट्रस्ट की ओर से उनका सम्मान किया गया।

कु. अंकिता राजेश शर्मा एम.टेक. इन इन्फार्मेशन टेक्नालॉजी में उपलब्धि हेतु श्री महेन्द्र कुमारजी लक्ष्मीनारायणजी नागर की स्मृति में सम्मान, श्री जयेश दवे सुपुत्र उमेश चन्द्र दवे का बेचलर ऑफ आर्ट्स थ्री.डी. एनिमेशन में सफलता हेतु श्रीमती शकुन्तला देवी महेन्द्र कुमारजी नागर स्मृति पुरस्कार, कु.सोम्या सुपुत्री रवीन्द्र व्यास आल इंडिया सीनियर सैकेण्डरी परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने पर श्रीमती मंजुला सतीशचन्द्र झा स्मृति पुरस्कार, कु.शुभांगिनी आनन्द कुमार व्यास 12वीं की परीक्षा में 75.8 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर राय साहब दुर्गाशंकर बापूजी त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार, कथन सुपुत्र विनीत नागर को 12वीं की परीक्षा में ए प्लस ग्रेड हेतु श्रीमती वेणुदेवी दुर्गाशंकरजी त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार, कार्तिक व्यास को पैंटिंग काम्पीटिशन में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया तथा डॉ.प्रतिभा नागर पति स्व.डॉ.अनूपचन्द नागर को सफल आयुर्वेदाचार्य के रूप में सम्मान किया गया तथा स्व.डॉ.श्रीधर पुराणिक की स्मृति में 1100 रुपए भेंट किए गए।

ज्ञातव्य है कि समस्त नागर विद्योत्तेजक फंड एवं ट्रस्ट के पदाधिकारियों के निर्णयानुसार कोई भी समाजजन अपने परिजनों की स्मृति स्वरूप 10,000 रु. जमा करवाकर प्रतिवर्ष एक प्रतिभा को आजीवन रजत पदक भेंट करने का अवसर प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञातव्य है कि ट्रस्ट का पेन कार्ड बनकर आ गया है तथा वर्ष 2015-16 तक का आडिट भी करवाया जा चुका है। ट्रस्ट को दिए गए दान में आयकर छूट प्राप्त करने के उद्देश्य से धारा 80 जी की कार्यवाई भी सीए वाल्मिकी नागर द्वारा की जा रही है।

हाटकेश्वर जयंती का यह आयोजन अत्यंत सफल रहा, समाज

की प्रतिभाओं ने गीत-संगीत प्रस्तुत कर शाम को सुहानी बना दिया। संगीत संध्या का संयोजन श्री हिमांशु पौराणिक ने किया तथा संचालन श्रीमती ममता मेहता ने किया। सभी उपस्थित समाजजनों ने बाबा हाटकेश्वर का भोजन प्रसाद पाकर अपने आप को उपकृत किया।

एक बार घोंचू एक लेक्चर क्लास में पढ़ रहा था।
जब लेक्चर क्लास खत्म हुई तो उसे बहुत तेज भूख लगी।
वह कुछ खाने के लिए कैंटीन में गया।
कैंटीन में घोंचू ने खाने के लिए एक पाव लिया।...जैसे ही उसने पाव खाने के लिए उठाया तो देखा कि उसकी प्लेट में जन्नत लिखा है...।
तो अब आपको यह बताना है कि घोंचू के प्रोफेसर का नाम क्या है?
.घोंचू के प्रोफेसर का नाम था- इश्क की छांव, क्योंकि जिनके सर (प्रोफेसर) हो इश्क के छांव, उनके पाव के नीचे जन्नत होगी।
चल छईयां छईयां छईयां छईयां छईया
चल छईयां छईयां छईयां छईयां छईयां
चल छईयां छईयां छईयां छईयां..... !!!

शोक पत्र की औचित्यता क्या?

जय हाटकेशवाणी एवं हाटकेश्वर समाचार के माध्यम से मैंने अपने विचार 'परिजन की मृत्यु पश्चात् तेरह दिनी शोक कार्यक्रम के संक्षिप्तीकरण के बारे में यथार्थ के धरातल व समय की कसोटी पर रखकर मंथन एवं मनन हेतु स्वजनों के सामने प्रस्तुत किए थे। साथ ही समाज के वरिष्ठ एवं प्रबुद्ध वर्ग के लगभग एक सौ व्यक्तियों को अन्तर्देशीय पत्र भेजकर 5 बिन्दुओं के समीकरण पर विचार मंथन एवं किसी ठोस निर्णय पर पहुँचने हेतु निवेदन किया था। पत्र में विशेष रूप से यह निवेदन किया गया था कि दशा, एकादशा व द्वादशा कार्यक्रम मृतक की आत्मा की शांति हेतु होकर शुद्ध रूप से पारिवारिक कार्यक्रम है, इसलिए शोकपत्र छपवा कर दूसरों को भेजने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं। रह जाता है तेरहवी का कार्यक्रम जो लोकलाज व दिखावे का कार्यक्रम रह गया है। मरीज की अच्छी प्रकार से परिवार में सेवा हो जाने के पश्चात भी यदि मृत्यु होती है, तो यही सबसे बड़ी तेरहवीं है।

सुधार का आगाज तो हो चुका है, अभी पिछले समय में इन्दौर निवासी श्रीमती उषाजी दवे के भतीजे एवं श्री उमेश दवे के छोटे भाई की असामयिक मृत्यु होने पर उन्होंने कोई शोक पत्र नहीं छपवाए। उज्जैन में होने वाले कर्म ही करवाए तथा एक दिन इन्दौर में शोक दिवस रखा। तेरहवीं का कार्यक्रम घर पर ही संक्षिप्त रूप में किया गया। दवे परिवार के द्वारा उठाए गए इस साहसिक कदम से समाजजनों को प्रेरणा लेना चाहिए।

तेरहवीं का कार्यक्रम औपचारिकता का पर्याय बन गया है। 'लोग क्या कहेंगे' यह सोचकर शोक पत्र छपवाए जाते हैं और तो और मृतक का फोटो भी शोकपत्र में छापा जाने लगा है। यह सब अच्छी तरह से जानते हैं कि 'शोक पत्र' कोई अपने घर में लम्बे समय तक नहीं रखता, कार्यक्रम के बाद सब फाड़कर कचरे में फैंक देते हैं। अब यह प्रबुद्ध लोगों के सोचने का बिन्दू है कि फाड़कर फैंक दिया गया 'शोक पत्र' मृतक के प्रति सम्मान है या संवेदना? या कुछ और ? अतः शोक पत्र किसी भी दशा में नहीं छपवाए जाए। इसके अलावा अन्य चार बिन्दुओं का सुझाव भी भेजा गया था। किन्तु बड़े अफसोस के साथ लिखना पड़ा रहा है कि समाज के 3-4 व्यक्तियों को छोड़कर किसी ने भी उत्तर देना उचित नहीं समझा। ऐसा लगता है कि एक प्रबुद्ध समाज होते हुए भी पूरा समाज निद्रा में सोया हुआ है। कोई भी कुप मंडूकता से बाहर निकलने का प्रयास नहीं करता। हम कब तक दकियानुसी परम्पराओं को ढोते रहेंगे। समय की कीमत हम नहीं समझ रहे हैं।

याद रखने वाली बात यह है कि समय उसी का साथ देता है जो समय के साथ चले। उसका सही मूल्यांकन करे वही कामयाब होते हैं। हैरानी की बात यह है कि नागर ब्राह्मण समाज एक अग्रणी समाज होते हुए कलम, कड़छी, बरछी का धनी होते हुए सुसंस्कृत एवं सभ्यता का प्रतीक होते हुए क्यों पुरानी परम्पराओं को थामें हुए हैं?

समय-समय पर समाज के वडील प्रबुद्ध लोगों से इस ज्वलंत समस्या पर चर्चा भी की है, लग तो ऐसा रहा है कि तेरहवीं के संक्षिप्तिकरण के सम्बन्ध में माहौल बन रहा है। सब रास्ता देख रहे हैं। थोड़े-थोड़े प्रयास शुरु भी हो गए हैं। ऐसी परिस्थितियों में सामाजिक पत्रिकाओं का यह विशेष दायित्व बनता है वे अपने सम्पादकीय में इस समस्या को अग्रलेख द्वारा फ्लेश करें तथा जनमानस तैयार करें।

साथ ही मैं पुनः समाज के प्रबुद्ध वर्ग, लेखक गण, कविगण व हर जगह स्थापित समाज की विधिवत स्थापित इकाईयों से यह पुरजोर अपील करता हूँ कि जहाँ भी मौका मिले स्वजन के सामने यह ज्वलंत मुद्दा उठावें व चर्चा करें। म.प्र. में संगठित इकाईयों के अध्यक्ष एवं म.प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष व देश में अन्य नागर समाज के संगठन इस बात पर गंभीरता से मनन करें तथा अपने क्षेत्र में होने वाली सभाओं को केवल Meeting व Eating तक ही नहीं सीमित रखें। सामुहिक रूप से लिए गए निर्णय एवं उसके क्रियान्वयन से निश्चित रूप से सुखद परिणाम निकलेंगे। साथ ही इकाइयों के पदाधिकारी व सदस्य गणों का यह व्यक्तिगत दायित्व भी बनता है यदि उनके नगर या गाँव में किसी परिजन की मृत्यु होती है तो सम्बंधित को प्रेरित कर समझाईश दें कि शोक पत्र नहीं छपवाए जाएं और कार्यक्रम पारिवारिक स्तर पर अत्यन्त सूक्ष्म रूप में करें।

बंधुओं! समस्या बड़ी गंभीर है, एकदम लोगों की मानसिकता बदलने में समय लगेगा। लोगों को समझाईश देने की भी 3 सूत्रीय चरण में योजना है, जिसे अमल में लाया जावे तो उचित रहेगा।

(1) पहले चरण में प्रभावित व्यक्ति के परिवार में नगर की ईकाई के अध्यक्ष व अन्य सदस्यों को जाकर सांत्वना के साथ निवेदन करना है कि कार्यक्रम संक्षेप में ही करना है। शोक पत्र नहीं छपवाना है। (2) दूसरे चरण में (यदि पहले चरण अनुसार सम्बन्धित द्वारा निवेदन नहीं माना जाता है) तो दबाव तथा प्रभावशील प्रतिक्रिया जाकर व्यक्त करना है। (3) यदि उक्त दोनों चरणों के प्रयासों से भी कोई बात नहीं बनती है तो ऐसे कार्यक्रमों का बहिष्कार सामूहिक रूप से किया जाए।

उक्त सारी चर्चाओं का सार यही है कि हमें समय से सामन्जस्य स्थापित करना है तथा चली आ रही इन परम्पराओं में सुधार लाना है। यकीन मानिए किसी को कुछ बुरा नहीं लगेगा और न ही आपके द्वारा उठाए गए सुधारात्मक कदमों की कोई आलोचना करेगा, क्योंकि वर्तमान में मनुष्य के पास अपने स्वयं के बारे में ही सोचने का समय नहीं है तो आपके बारे में सोचने या कुछ कहने का तो प्रश्न ही नहीं है।

आईए इस सुधारात्मक यज्ञ में हम अपनी आहूति देने से क्यों चूकें?

हमारे कदमों को सही दिशा में एक दृढ़संकल्प शक्ति के साथ हमें आगे बढ़ाना चाहिए, वरना वक्त निकल जाने पर कहीं हमें इस प्रकार पछताना नहीं पड़े-

बस एक गलत कदम उठा था राहों में,
तमाम उम्र मंजिल ढूंढती रही हमें।।

-सुरेश दवे 'मामा'
नीमवाड़ी, शाजापुर
फोन 07364-227004 (रात्री 8 बजे)

विषय- शर्मनाक उदासीनता

उस रोशनी को भला कौन मंद कर सकता है, जो हमारे भीतर से चमकती है

किसी अखबार में एक कॉलम प्रकाशित हुआ था- शीर्षक था- "Lighten-up! Try 9-10 secret". जिसमें बात की गई थी कि कैसे हमारे जीवन का 10 प्रतिशत इस बात से बना होता है कि आपके साथ 'क्या' घटित होता है? और शेष 90 प्रतिशत इस बात से तय होता है कि आप उससे 'किस तरह प्रतिक्रिया' करते हैं।

संभवतः यह 10 प्रतिशत या तो स्वयं रचित होता है या प्रकृति जनित। इस 10 प्रतिशत में हम ब्राह्मणों ने (शायद) कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा कि आरक्षण की आवश्यकता हमें भी है। अतः हमने इस ओर प्रयास किया ही नहीं। ऑस्कर वाइल्ड सच ही कह गये कि जो व्यक्ति अपने बारे में सोचता ही नहीं है वह सोचता ही नहीं। आरक्षण/सुरक्षित अधिकार एक विशेष अधिकार होता है, जिसे पा लेने पर हम विशेष सुविधाओं, सौगातों से लाभान्वित हो सकते हैं। विशेषतः यह सुविधाएं नौकरी पाने, कॉलेज में प्रवेश पाने आदि विशिष्ट अवसरों पर प्राप्त होती है आरक्षित को।

हम तो सदैव ही अपने को उत्कृष्टता का पैमाना बनाने के प्रयास में ही लगे रहे वह अब तक लगे हुए भी है। किन्तु समय की लय कब क्या घटित करा दे कब 'इन्द्र धनुष का आठवां रंग' दिखाई देने लगे, कब कौन सा झटका हमें हिला दे, कह नहीं सकते। एक उदाहरण है- अल्फ्रेड नोबल का, इन्होंने 'डायनामाइट की खोज की ओर करीब 90 से अधिक शस्त्र आयुधों के कारखाने स्थापित किये जिनसे माकूल धन अर्जित किया, किन्तु इनके जीवन में एक अजीब घटना घटित हुई जिसने उन्हें बहुत बड़ा झटका दिया व उनका जीवन ही बदल डाला, उनके भाई का निधन हुआ किन्तु अखबारों में गलती से छप गया- अल्फ्रेड नोबेल-द मर्चेन्ट ऑफ डेथ इज डेड।

इस झटके से आहत होने के कारण अल्फ्रेड ने अपनी सारी कमाई से पांच नोबल पुरस्कार देने हेतु अपनी अंतिम इच्छा (विल) जाहिर कर दी। क्या हम ऐसे किसी 'झटके' की राह देखते रहेंगे। हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है- इस दिशा में प्रयास करने के प्रति हमारी उदासीनता। आरक्षण के प्रति हमारे प्रलोभन में कमी। प्रलोभन हो भी कैसे? प्रलोभन तो 'ज्ञात' के प्रति ही होता है 'अज्ञात' के लिये प्रलोभन कैसा?

प्रसिद्ध इतिहासकार रोमिला थापर कहती है- अब हमें अपनी पहचान धर्म या जात के आधार पर करना बंद कर देना चाहिये और एक 'भारतवासी' (सिटीजन ऑफ इंडिया) के रूप में अपनी पहचान बनाना शुरु कर देना चाहिए और अब तो मनुष्य को महज एक 'सामाजिक प्राणी' (सोशल एनीमल) से ज्यादा आंका जाने लगा है, क्योंकि उसकी संवेदनशीलता में काफी इजाफा होता जा रहा है और अब वह 'बिकमिंग' (संभवन) की राह पर चलने की ओर भी ध्यान देने लगा है।

हमारा संसार समस्याओं से भरा है, किन्तु समस्या को अशुभ तत्व (अनिष्ट) न मानते हुए हमें उसे एक चुनौती के रूप में देखना चाहिये, इस प्रकार हर आने वाली समस्या हमें सचेत करने का पैगाम लेकर आती है

वर्तमान प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली में तो यह स्पष्ट नजर आ रहा है कि भविष्य में आरक्षण समाप्त होने वाला नहीं है। इस सूरते हाल में हम (ब्राह्मणों) को भी आरक्षण के लिये मांग रखने में कोई हानि नजर नहीं आती। किन्तु हमारा मार्ग इस दिशा में पूर्णतः शांति व अहिंसक होना चाहिये, क्योंकि हाल के वर्षों में हुए पाटीदार, गुर्जर, जाट आदि आरक्षण आंदोलनों में न जाने कितनी जन-धन की हानि हुई थी व जनसाधारण को कितना कष्ट झेलना पड़ा। यह किसी से भी छुपा नहीं है।

इस मार्ग को खोजने हेतु हमें अपने बुद्धि, विवेक व संवेदनशीलता से गहन विचार करना होगा। कहते हैं साध्य-साधन को समर्थित करता है, किन्तु भी अधिक सुसंगत होगा यह कहना है कि साध्य आरंभ को समर्थित करता है। लक्ष्य प्राप्ति में सफलता या असफलता यह सिद्ध करती है कि आरम्भ सही या गलत। अतः 'आरक्षण की मांग' का आरम्भ कैसे कहाँ से किया जाय यह तय करना महत्वपूर्ण होगा। वास्तविकता यह है कि हमारा संसार समस्याओं से भरा है, किन्तु समस्या को अशुभ तत्व (अनिष्ट) न मानते हुए हमें उसे एक चुनौती के रूप में देखना चाहिये, इस प्रकार हर आने वाली समस्या हमें सचेत करने का पैगाम लेकर आती है.. अतः 'आरक्षण की मांग' का आरम्भ हमें विजय की कामना एवं इस मार्ग में सफल होने की अभिलाषा के साथ करना होगा, क्योंकि ये कुंजियां ही सफलता के द्वार खोल सकती है।

साथ ही जॉन मिल्टन के उपन्यास 'पेराडाइज-लास्ट' की एक सुंन्दर पंक्ति को भी याद रखना होगा। हमारे मस्तिष्क की स्वयं की एक अहम स्थिति होती है वह नरक को स्वर्ग और स्वर्ग को नरक बना सकता है और अब अंत में 'उस रोशनी को भला कौन मंद कर सकता है, जो हमारे भीतर से चमकती है।

-मोरेश्वर मंडलोई
खण्डवा, मो. 9425342890

सफलता प्राप्त करने का शार्टकट- 'आरक्षण'

प्राचीन काल से ही ब्राह्मण समाज को उच्च स्थान पर रखा गया है, लेकिन अब आज का समय देखते हुए लगता है कि ब्राह्मण समाज सरकार की तरफ से सबसे उपेक्षित वर्ग बनता जा रहा है। हमारे समाज के काबिल और होनहार बच्चे केवल आरक्षण की वजह से अच्छे पद पर आसीन होने से वंचित रह जाते हैं।

आज आवश्यकता है ब्राह्मण समाज को अपनी एकता दिखाने की एकजुट होने की, हाँ मैं यहाँ केवल नागर समाज की ही बात करना नहीं चाहूँगी, बल्कि सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज अपने अंदरुनी जाति भेदभाव मिटा दें और एकजुट होकर अपनी बात सरकार के सामने रखें।

अगर ब्राह्मण समाज अभी भी गहरी नींद से नहीं जागा तो वह समय दूर नहीं जब सबसे उच्च वर्ग निम्न वर्ग में बदल जाएगा और भारत देश अयोग्य आरक्षित वर्ग के हाथों की कठपुतली बन फिर अशिक्षा का गुलाम बन जाएगा। आज ब्राह्मण समाज को आवश्यकता है, जागरुक युवा पीढ़ी की, साथ ही अनुभवी माननीय नागरिक एकजुट होकर आरक्षण जैसे महिषासुर का नाश कर सकेंगे। या फिर हम भी ब्राह्मण समाज को आरक्षण दिये जाने की मांग करें।

ब्राह्मण समाज के सभी जनों से निवेदन है-
आरक्षण - आरक्षण सुनते-सुनते
अब तो कान पक गये हैं।
आरक्षण के दुष्परिणाम भोगते-भोगते
बच्चे भी परेशान हो गये हैं।
समय है अब जागने का,
आरक्षण का अंधकार दूर करने का,
हम भी सरकार से मिलकर मांग करें।
या तो आरक्षण हटे या हमें भी आरक्षण मिले।

अपनी बात सरकार तक पहुचाने के कई तरीके हैं चाहे वह इन्टरनेट हो, आंदोलन हो या अहिंसा। समाज में बदलाव लाना है तो एक जोरदार क्रांति का आगाज करना होगा। जय हिन्द

-श्रीमती रश्मि भूपेन्द्र नागर
1644-डी, सुदामा नगर, इन्दौर
मो. 9424567007

लोग क्या कहेंगे?

लोग क्या कहेंगे? लोग क्या कहेंगे? लोग क्या कहेंगे? इस बात को लेकर हम सभी अक्सर परेशान रहते हैं। एक पौराणिक कहानी के माध्यम से मैं आप को इस समस्या को दूर करने का प्रयास कर रही हूँ और इस कहानी को अपनी भाषा में व्यक्त कर रही हूँ।

एक समय की बात है भगवान शिव और माता पार्वती सामान्य मनुष्य का रूप धारण कर नगर भ्रमण के लिए बैल की सवारी लेकर निकले और दोनों बैल पर एक साथ बैठे और नगर-भ्रमण करने लगे बैल थोड़ी दूर ही चला था कि लोग कहने लगे कैसे लोग हैं दोनों एक-साथ बैल पर लदा गये बेचारा बैल। यह बात शिव-पार्वती ने सुन ली, तो उन्होंने आगे के रास्ते पर माता पार्वती को बैल की सवारी पर चलने को कहा और खुद पेदल चलने लगे। यह देख लोग फिर कहने लगे कैसी औरत है खुद तो बैल पर लद गई और अपने पति को पैदल चला रही है। हाय राम कैसा जमाना आ गया। यह बात भी शिव-पार्वती ने सुन ली। तो फिर क्या था शिवजी ने खुद बैल की सवारी करनी चाही और माता पार्वती को पैदल चलने को कहा। पर थोड़ी दूर तय करने के बाद देखते है कि लोग फिर कहने लगे कैसा आदमी है अपनी पत्नी को पैदल चला रहा है और खुद बैल पर लद गया। यह बात भी शिव-पार्वती ने सुन ली तो फिर शिवजी ने तय किया क्यों न बैल को खाली ही चलाया जाए अब कोई कुछ भी नहीं कहेगा पर थोड़ी ही दूर चलने के बाद देखते हैं कि लोग फिर कहने लगे कैसे पागल लोग है बैल को खाली ही चला रहे हैं और खुद पैदल ही चल रहे हैं, बैठकर क्यों नहीं चले जाते। सारे जतन कर लिए कि अब कोई कुछ नहीं कहेगा, लोगों के कहे अनुसार सब किया आपने उपरोक्त कहानी में पढ़ा ही होगा, फिर भी लोगों का कहना बंद नहीं हुआ अर्थात् कहने का तात्पर्य लोगों को कहीं पर भी चैन नहीं है। वो बोले बिना नहीं रह पाते।

-श्रीमती निशि पुरुषार्थ पंड्या
सी-11/3, ऋषि नगर, उज्जैन
फोन 0734-2517824,
मो. 9824016626

वैवाहिक युवक

प्रशान्त डॉ.गोपेश नागर
जन्मदि. 14-4-1984
समय- 11 pm, अकलेरा (राज.)
शिक्षा- चार्टर्ड अकाउंटेंट
कार्यरत- बायोस्टड बायोसाईंस प्रा.लि. मुम्बई
पैकेज- 10 लाख
सम्पर्क- श्री सुधीर नागर (अंकल) 09414189633, (फादर) 09887623550
श्रीमती प्रमिला नागर 08504854965

अनिकेत विनयकांत नागर
जन्मदि. 20-1-1986
समय- 8.05 ए.एम., नागपुर
शिक्षा- बी.कॉम.,
कार्यरत- एच.पी.गैस पैट्रोलियम रायबरेली (उ.प्र.)
सम्पर्क- मो. 07565954047

अर्पित पंड्या
जन्मदि. 12-3-1988
समय- 12.58 a.m., अहमदाबाद
शिक्षा- एम.एस.सी., आय.टी., एम.बी.ए. (एच.आर.एंड आय.टी.)
सम्पर्क- सुनील कुमार नागर मो. 9897053151

मौलिक विमल भाई पंड्या

जन्मदि. 17-3-1984
समय- 2.15 प्रातः, जूनागढ़ (गुज.)
कद- 5'3", वजन- 60 किलो
शिक्षा- बी.कॉम. टेली अकाउंट
मासिक आय- 12,000/-
सम्पर्क- राजकोट मो. 9687625632

हार्दिक गिरीशचन्द्र पंड्या

जन्मदि. 12-7-1983
समय- 3.5 (दोप.), खण्डवा
गौत्र- पाराशर, कद- 5'7", वजन- 68, मंगल- है।
शिक्षा- एम.कॉम., पीजीडीसीए
कार्यरत- एमआईटीएस कॉलेज, उज्जैन
सम्पर्क- एल.आई.जी., सी-11/3, ऋषि नगर, उज्जैन
फोन 0734-2517824, मो. 9827348396

प्रबल अनिल मेहता

जन्मदि. 28-11-1992
समय- 2.00 पी.एम., इन्दौर
शिक्षा- एम.बी.ए.
कार्यरत- ड्यूटेक बैंक (अंतरराष्ट्रीय) अहमदाबाद
सम्पर्क- 0755-4265003, 8982322009

स्वर्णिम विजय नागर
जन्मदि. 8-6-1990, कद- 5'11', गौत्र- शार्कराक्ष
समय- प्रातः 3.50 ए.एम., उज्जैन
शिक्षा- बी.ई. कम्प्यूटर साईंस, एम.बी.ए. मार्केटिंग (आई.बी.एस. हैदराबाद)
कार्यरत- एरिया मैनेजर, प्रेक्टो टेक्नालॉजी, इन्दौर
सम्पर्क- वैरावल (गुज.) मो. 09714968689

वैवाहिक युवती

नुपूर पंडित

जन्मदि. 8-12-88, कद- 5'2"
शिक्षा- एम.एस.सी. (बायोइन्फर्मेटिक्स), बी.एस.सी. (बायोटेक्नालॉजी), पी.जी. डिप्लोमा इन इंटेक्च्यूअल प्रापर्टी राईट्स एंड पैटेंट मैनेजमेन्ट
कार्यरत- फेलो इन नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन गांधीनगर (गुज.)
सम्पर्क- 09425950024, 09752275781

दिव्या पंड्या
जन्मदि. 16-10-1991
समय- 8.10 ए.एम., आगरा
शिक्षा- एम.एस.सी. (फूड एंड न्यूट्रीशियन), बी.एड.
सम्पर्क- सुनीलकांत नागर आगरा मो. 9897053151

खुशबू भुवनेश कुमार नागर

जन्मदि. 5-8-1989
समय- 4.44 पी.एम., उज्जैन
शिक्षा-एम.एस.सी., एम.एड.
सम्पर्क- बकानी, जिला झालावाड़ (राज.)
मो. 09414571151, 09571423741

श्रुति उपाध्याय

दिनांक 17-7-1987
स्थान- जावरा, कद- 5'3",
गौत्र- कौशल्य (दशोरा नागर ब्राह्मण)
शिक्षा- बी.ई., एम.बी.ए. (आय.टी.)
कार्यरत- सिनीयर ग्राफिक डिजाईनर (मुम्बई में)
सम्पर्क- मो. 9425657994/993

जन्मदिन

श्रीमती अनुभा शरद नागर उदयपुर
1 मई

श्रीमती चारुमित्रा प्रदीप जाधव इन्दौर
6 मई

श्री कृष्णकांत नं. व्यास मन्दसौर
13 मई

डॉ.श्रीमती ऋचा (पौराणिक) जे.क्लिमेटव (अमेरिका)
(सुपुत्री- डॉ.गणेशराम पौराणिक)
30 मई

शुभाकांक्षी- जोशी, नागर, जाधव, तिवारी परिवार, इन्दौर, महू
-पी.आर.जोशी

30 मई नीलम मामी को जन्मदिन की बधाई
-प्रेषक- अभिलाषा अमित त्रिवेदी, अहमदाबाद

विवाह वर्षगांठ की बधाई

बांसवाड़ा निवासी श्री रवीन्द्र कुमार नागर सुपुत्र मोघालालजी नागर एवं श्रीमती शक्ति नागर के 30 अप्रैल 2016 को विवाह की अड़तीसवीं वर्षगांठ की बहुत-बहुत बधाई।

नागर ब्राह्मण समाज की वेबसाईट पर रिश्तों के लिए निःशुल्क पंजीयन करें
www.nagarmarriage.com

सूर्यकांत नागर को श्री नरेश मेहता स्मृति सम्मान

हिन्दी मंगल महोत्सव समिति और अ.भा. मानस परिवार, उज्जैन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिन्दी महोत्सव के अवसर पर हिन्दीसेवी एवं साहित्यकार सूर्यकांत नागर को उनके दीर्घ साहित्य अवदान के लिए श्री नरेश मेहता स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान संत श्री डॉ. सुमन भाई ''मानस भूषण'' के हाथों प्रदान किया गया। सान्निध्य में मंच पर उपस्थित थे कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. हरीश प्रधान, मुख्य अतिथि संयुक्त आयुक्त (विकास), उज्जैन संभाग, प्रतीक सोनवलकर तथा विशेष अतिथिद्वय साहित्यकार डॉ. शिव चौरसिया और डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा। शाल-श्रीफल-प्रशस्ति-पत्र के अतिरिक्त श्री नागर को पांच हजार एक सौ रूपये की सम्मान राशि भेंट की गई। इस अवसर पर स्व. दिनकर सोनवलकर की कविताओं पर आधारित नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम का संचालन अभिभाषक, समाजसेवी कैलाश विजयवर्गीय ने किया।

शैलेष मटियानी कथा-सम्मान- कथाकार सूर्यकांत नागर को कथा के क्षेत्र में दीर्घ अवदान के लिए 'श्री शैलेष मटियानी स्मृति चित्रा-कुमार कथा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। म.प्र.राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल द्वारा हिन्दी भवन में आयोजित समारोह में यह सम्मान उन्हें वरिष्ट आलोचक, लेखक डॉ. नंदकिशोर आचार्य (हैदराबाद) तथा प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं कला समीक्षक प्रयाग शुक्ल (दिल्ली) द्वारा

प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें शॉल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह और २१,००० रू. की राशि भेंट की गई। अनेक सम्मानों से अलंकृत नागर के अब तक नौ कथा-संग्रह, दो उपन्यास, दो व्यंग्य-संग्रह, दो निबंध-संग्रह, एक लघुकथा-संग्रह और संस्मरणात्मक साहित्य की एक कृति प्रकाशित हो चुकी है। उनकी रचनाओं का मराठी, पंजाबी, सिंधी और बांगला में अनुवाद हुआ है।

शताब्दी सम्मान- गत दिनों श्री म.भा.हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर के शताब्दी सम्मान समारोह के अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार श्री सूर्यकांत नागर को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान वरिष्ठ आलोचक डॉ. विजय बहादुर सिंह (भोपाल) एवं लोक संस्कृतिविद् डॉ. श्यामसुन्दर दुबे (दमोह) द्वारा प्रदान किया गया।

इन्टरनेशनल ओलंपियाड की परीक्षा में गोल्ड मेडल प्राप्त करने के लिये ध्वज त्रिवेदी को बधाई।

-प्रेषक- अभिलाषा अमित त्रिवेदी

श्रीमती मनोरमा नागर का सम्मान

मेवाड़ यूनिवर्सिटी के तत्वावधान में आयोजित नेशनल सेमिनार ऑन एस्ट्रोलॉजर में मक्सी निवासी श्रीमती मनोरमा नागर का सम्मान प्रशस्ती पत्र भेंट कर किया गया। ज्योतिष में शोध पत्र वाचन हेतु उच्चशिक्षा मंत्री ने भोपाल में सम्मान किया। श्रीमती मनोरमा नागर मक्सी में शिक्षिका के पद पर कार्यरत है।

श्री उमेश मेहता सेवानिवृत्त

श्री उमेश मेहता, सुपुत्र रतलाम निवासी श्री गुणेश्वर मेहता, भारतीय वायु सेना में 37वर्ष से अधिक का सराहनीय सेवाकाल पूर्ण कर, नम्बर वन एम.पी.एअर स्क्वेड्रन एन.सी.सी. इन्दौर से आनरेरी फ्लाईंग ऑफिसर (एचएफओ) के पद से दिनांक 31-3-2016 को सेवा-निवृत्त हुए। अपने सेवाकाल के दौरान एचएफओ उमेश मेहता ने संयुक्त राष्ट्र संघ के अधीन शान्ति सेना की भारतीय वायु सेना टुकड़ी में लगभग 15 माह की अवधि के लिए वर्ष 2008-09 में अफ्रिकी देश डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगों में भी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की।

एचएफओ उमेश मेहता की भारतीय वायु सेना से गरिमामय सेवा-निवृत्ति पर सभी परिवारजन गौरवान्वित अनुभव करते हैं और उनके सपरिवार दीर्घ एवं सुखी जीवन की कामना करते हैं।

समस्त मेहता परिवार रतलाम, नागदा, इन्दौर नागर परिवार बड़ोदा, उदयपुर एवं दवे व भट्ट परिवार, जयपुर

श्री अमित शर्मा

श्री अमित शर्मा सुपुत्र सौ.भारती शैलेन्द्र शर्मा का चयन आई.सी.आई.सी.आई. बैंक में कस्टमर सर्विस मैनेजर के पद पर 4.2 लाख रु. वार्षिक के पैकेज पर हुआ है।

चि.अमित श्री विद्यानंदजी शर्मा के पौत्र एवं श्री प्रकाशचन्द्र पंड्या (रतलाम) के नाती है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी सिद्धार्थ नागर

आकाशवाणी, रंगमंच, दूरदर्शन और सिनेमा जैसी मनोरंजन की हर विधाओं में सिद्धार्थ नागर अपना एक अलग मुकाम बना चुके हैं। साथ ही कला और साहित्य के क्षेत्र में भी सिद्धार्थ नागर की गहरी पकड़ है जो उनके धारावाहिकों में दिखती है। कला और साहित्य का संस्कार तो उन्हें विरासत में मिला है। फिल्मों और धारावाहिकों के लेखन में उन्होंने अपना एक मुकाम बनाया है। नाना और मां की तरह सिद्धार्थ नागर भी एक शख्सियत के रूप में पिछले पचीस वर्षों से अपनी छाप बनाये हुए हैं। दूरदर्शन के लिए 2000 घंटों से अधिक साफ्टवेयर तैयार कर चुके हैं और इन दिनों डीडी किसान पर उनका धारावाहिक 'शिक्षा एक मजबूत आधारशिला' सफलतापूर्वक प्रसारित हो रहा है।

सिद्धार्थ नागर के धारावाहिकों की खासियत यह होती है कि उसमें महिला पक्ष बहुत मजबूत होता है। ज्यादातर उनके धारावाहिकों की कहानियां महिला के इर्द-गिर्द ही घूमती है। वह कहते हैं कि जिस तरह से महिला अपने परिवार की धूरी होती है उसी तरह मैं अपने धारावाहिकों में महिला को एक धूरी की तरह उपयोग करता हूँ। 'शिक्षा एक मजबूत आधार शिला' के अध्यक्ष उनका एक और धारावाहिक 'साबजी' भी जल्द ही शुरु होने वाला है। इसके अलावा उनका अगला पड़ाव फिल्म होगा।

वर्चस्व याज्ञनिक सीए बने

श्री वर्चस्व याज्ञनिक आत्मज श्री सुशील कुमार द्वारा सी.ए. की परीक्षा प्रथम प्रयास में (वर्ष 2015) उत्तीर्ण होने (400 अंक में 219 अंक प्राप्त किए) पर कोटा नागर समाज एवं अ.भा. नागर परिषद की ओर से बधाई।

चि. उदित आत्मज राजेश कक्षा प्रथम शिवज्योति स्कूल कोटा 2015 परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। बधाई।

प्रेषक- आर.एन. नागर, कोटा

काँची की विशेष उपलब्धि

कु.काँची प्रज्ञा आशीष दीक्षित को कक्षा आठवीं में 8.8 सीजीपीए (एक्सीलेंट) प्राप्त होने पर समस्त परिवार जनों की ओर से ढेरों बधाईयाँ।

कुलदीप का सुयश

कुलदीप नागर सुपुत्र-बालकृष्ण नागर मक्सी ने स्थानीय कॉल्पिंग कान्वेन्ट हायर सैकण्डरी स्कूल में कक्षा 7वीं में 85 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। बधाई मो. 9826508504

चि.हिमांशु एवं कु. मोक्षदा को सुयश

सौ. शकुन्तला वरिष्ठ पत्रकार श्री हरिनारायण नागर देवास के पौत्र-पौत्री तथा सौ.सुनीता-मनमोहन नागर के पुत्र-पुत्री जो कि केन्द्रिय विद्यालय बी.एन.पी. देवास में अध्ययन रत है। पुत्र हिमांशु नागर ने सी.बी.एस.सी. पाठ्यक्रम अंग्रेजी माध्यम से कक्षा ग्यारहवीं में 70 प्रतिशत अंक अर्जित कर कक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। इसी तरह पुत्री कु.मोक्षदा नागर ने कक्षा 9वीं में 9.8 सी.जी.पी.ए. अंक अर्जित कर कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त कर परिवार एवं विद्यालय को गौरवान्वित किया है।

उत्कर्ष का सुयश

उत्कर्ष नागर

सुपुत्र- जितेन्द्र दीपिका नागर

मोती बंगला देवास ने कक्षा नर्सरी में 9.3 सी.जी.पी.ए. प्राप्त किये। बधाई मो. 9827678692

विदेशों में परवान चढ़ रही है भारतीय संस्कृति

भारत एक विविध प्रधानता देश है। यहाँ की सभ्यता और संस्कृति का उल्लेख विश्व विख्यात है। ऐसा ही कुछ हमें देखने को मिला जब मैंने (नेहा-पियुष नागर) ने विदेश भ्रमण किया।

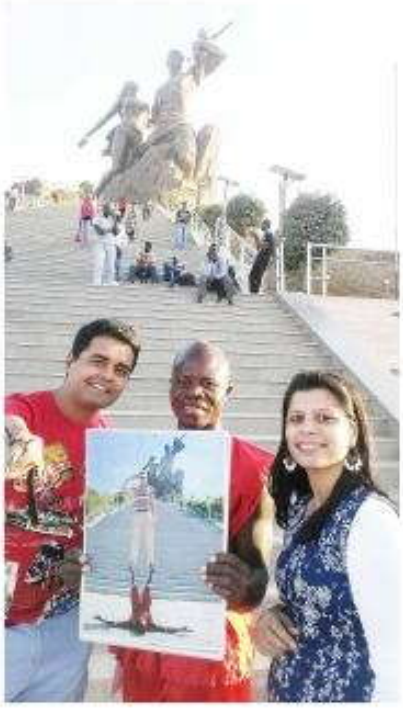

पहली यात्रा थायलैंड से हुई। वहाँ के लोग भारतीय संस्कृति से प्रभावित है। बौद्ध धर्म वहाँ की पहचान है। हमने देखा कि चाहे वह छोटी दुकान हो, होटल हो घर या मॉल हो सभी जगह बाहरी स्थानों पर गणेशजी की मूर्ति विराजित है। वहाँ गणेशजी को 'इक्कणेश' कहते हैं। वहां पर शिवजी, ब्रह्माजी की मूर्तियाँ भी है। सुबह उठते ही लोग भगवान के चरणों में वन्दन करते हैं। किसी भी वस्तु का भोग लगाते हैं और फिर अपनी दिनचर्या आरम्भ करते हैं। यहाँ पर 'समुद्र मंथन' से भी लोग परिचित है। बैंकाक के एयरपोर्ट का नाम 'स्वर्ण भूमि' है, जो कि संस्कृत भाषा में रखा गया है। यहीं पर समुद्र मंथन का विशाल दृश्य है। यहाँ पर एक अयुथ्थाया नाम की जगह भी, जिसका नाम अयोध्या, 'श्री राम नगरी' के नाम पर पड़ा। यहीं पर रामजी और हनुमानजी की उपासना भी की जाती है। हमने लोगों में प्यार और आदर की भावना देखी।

उसके बाद हमने यूरोप के आस्ट्रिया में भी बहुत समय बिताया। वियेना के पास एक मंदिर है जिसका नाम 'श्री श्री राधा गोपिदा गोदिया मठ' है। यहाँ पर हिन्दुओं के अलावा कोई आस्ट्रियन व्यक्तियों ने हमारे सभ्यता को अपनाया और नित्य वहाँ पूजा-अर्चना करते हैं। यह दृश्य वास्तव में अद्‌भूत है। भारत की संस्कृति विदेशों में देखकर हमारा मन प्रफूल्लित हो गया। तत्पश्चात् हम अफ्रीका आ गये। यहाँ पर जैसा कि नाम से समझते हैं कि अच्छी जगह नहीं है। पर ऐसा कहना गलत है। हमारे विचार भी बदल गये जब हम अफ्रीका में सेनेगल (डाकर) में आये और यहाँ के लोगों के बारे में जाना। यहाँ पर सबसे अच्छा लगा 'विभिन्नता में एकता' जो कि सिर्फ भारत में ही है और भारतीयों के दिलों में। डाकर में जो भारतीय है, वे सारे त्यौहार एक साथ मनाते हैं। हमें भी त्यौहार को अफ्रीका में मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन त्यौहारों में बड़ी मात्रा में गुजराती, ब्राह्मण, मराठी, पंजाबी, क्रिश्चियन, मुस्लिम, मद्रासी सभी एक जगह एकत्र हुए और शुरु हुआ रंगों कारवां। इन भांति-भांति लोगों के मित्रगण जो की फ्रेंच या निग्रो है वे भी हमारे त्यौहार को मस्ती से मनाते हैं।

यह सब देखकर लगा मानों भारत से दूर भी हमारी संस्कृति और उसका उल्लेख विश्व विख्यात है। आदर और स्नेह सभी के दिल में है। इसी माध्यम से हमें यह संदेश भी मिलता है कि अगर हम सब आपस में, परिवार में, समाज में, प्यार, स्नेह, आदर-सत्कार और संस्कार दे हमारी भावी पीढ़ी को, तो हमारा राष्ट्र अधिक ऊँचाईयों को छूएगा।

-नेहा पियूष नागर
शुभम रेसीडेंसी, राजेन्द्र नगर, इन्दौर
मो. 9039512123

बांसवाड़ा निवासी श्री भागवत दवे उभरते हुए कार्टूनिस्ट हैं। उनके द्वारा बनाए गये दो कार्टून यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

26वीं विवाह वर्षगांठ की बधाई

5 मई

शुभाकांक्षी– श्रीमती प्रेमलता–स्व. श्री रामप्रसादजी शर्मा
सौ.आशा–रमेशचन्द्र शर्मा, सौ.दीक्षा–अश्विन शर्मा,
सौ.पूजा–सर्वज्ञजी पुराणिक, आस्था, हार्दिक एवं वेदार्थ
इन्दौर, सौ.अलका–हितेन्द्रजी नागर, दीक्षा कनार्दी,
श्रीमती सुमित्रा–स्व.डॉ.रामरतनजी शर्मा,
सौ.मनीषा–मुकेश शर्मा, हर्षित एवं शिवेश शर्मा, उज्जैन
श्रीमती सुशीला–स्व.ओमप्रकाशजी रावल,
सौ.कविता–विजय रावल, सौ.उमा–मुकेश रावल
आदर्श, नम्रता, आंचल एवं आराध्या बड़ावदा (जावरा)
सौ.मंगला–बलरामजी नागर, हर्ष नागर घूंसी (शाजापुर)

डॉ.राजेन्द्र–सौ.नीलम शर्मा

स्वर्णिम मध्यप्रदेश के स्वप्नदृष्टा पद्म भूषण पं.भगवंतरावजी मण्डलोई की स्मृति में

अखिल भारतीय क्रिकेट प्रतियोगिता

का आयोजन खण्डवा में

दिनांक 13–14 नवम्बर 2016 को

सभी नागरजनों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र की टीम को खण्डवा क्रिकेट प्रतियोगिता में शामिल होने के लिये भेजें। संजीव मण्डलोई, दीपक जोशी, मनोज मण्डलोई, अभिलाष दीवान, योगेश मेहता

सम्पर्क – 9826387522

उज्जैन तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ : देवताओं के लिए भी दुर्लभ

कुम्भ मेला हिन्दु धर्म का अति महत्वपूर्ण महान धार्मिक पर्व है। प्रति बारहवें वर्ष विश्वस्तर का महान पर्व उज्जैन में क्षिप्रा तट पर आयोजित होता है। बृहस्पति जब सिंह राशि में और सूर्य मेष राशि में होता है तब यह पर्व वैशाख मास में आयोजित होता है।

मेष राशि गते सूर्ये सिंह राशौ बृहस्पतौ।
उज्जयिन्यां भवेत्कुंभ सर्व सौरव्य विवर्धनः।।

तथा

सिंह राशि गते जीवे मेषस्ये च दिवा करे।।

अर्थात् सिंह राशि में बृहस्पति आने पर वैशाख मास में मेष के सूर्य के संयोग से उज्जैन में कुम्भ महापर्व का योग बनता है। सिंह राशि में गुरु की स्थिति को परम तेजस्वी माना गया है, इसी कारण पर्व का नाम कुम्भ पर्व न होकर सिंहस्थ पर्व है। वहीं पुण्य प्रदाता महायोग उज्जैन में क्षिप्रा तट पर 22 अप्रैल 2016 से 21 मई 2016 तक प्राप्त हुआ है।

इस सम्बन्ध में पुराण में वर्णित कथा अति संक्षेप में लिखना अति आवश्यक है। जब इन्द्र स्वर्ग के राजा बने तो उन्हें स्वर्ग के विशाल साम्राज्य, पद एवं प्रतिष्ठा का अति गर्व हो गया। महर्षि दुर्वासा ने इन्द्र के आशीर्वाद स्वरूप पुष्पमाला धारण करने हेतु भेंट की। इन्द्र ने गर्व के कारण उस पुष्प माला को अपने एरावत हाथी के सामने फैंक दिया। हाथी ने माला को अपने पाँवों से कुचल दिया। महर्षि दुर्वासा को क्रोध आया व श्राप दे दिया। 'इन्द्र तू पद प्रतिष्ठा से हीन होकर दरिद्र हो जा।'

श्राप वश इन्द्र दैत्यों से युद्ध में हार गया। स्वर्ग का राज्य दैत्यों को प्राप्त हो गया। अत्यन्त दुःखी होकर देवगण भगवान विष्णु की शरण में गये। विष्णु ने कहा आप दैत्यों से मित्रता कर समुद्र का मन्थन करो। मन्थन से समुद्र से अमृत कुंभ निकलेगा। मैं तुम्हें अमृत पिलाकर अमर बना दूंगा।

देवताओं ने दैत्यों से मित्रता की समुद्रमन्थन प्रारम्भ हुआ। भगवान विष्णु ने डूबते हुए मंदराचल को कुर्मावतार लेकर पीठ पर धारण किया। समुद्र मन्थन से भगवान धन्वन्तरी अमृत कुम्भ लेकर प्रकट हुए। दैत्यों ने उनसे अमृत कुंभ छीन लिया।

अब दैत्य अमृत कुम्भ के लिये छीना झपटी करने लगे। इसके कारण अमृत बूंदे उज्जैन, प्रयाग, हरिद्वार, और नासिक में छलकी। इन्हीं चारों स्थानों पर कुम्भ पर्व का आयोजन प्रारम्भ हुआ। वहीं संयोग उपस्थित होने पर कुम्भ पर्व आयोजित होता आ रहा है। अमृत बूंदे क्षिप्रा नदी में गिरने के कारण सिंहस्थ के समय क्षिप्रा का जल अमृत तुल्य हो जाता है ऐसी मान्यता है। उसी पवित्र जल में श्रद्धालु स्नान करते हैं। उज्जैन का अति प्राचीन काल से गौरवशाली इतिहास रहा है। इसके प्राचीनतम निम्न नाम रहे हैं-

(1) कुशस्थली, (2) अमरावती, (3) चूड़ामणी, (4) पद्मावती, (5) कुमदवती, (6) विशाला, (7) अवन्तिकापुरी, (8) उज्जयिनी, (9) वर्तमान नाम उज्जैन है।

कुशस्थली तीर्थनरं देवानामपि दुर्लभम् ।

उक्त श्लोक में ऋषि ने कुशस्थली (उज्जैन) को तीर्थों में श्रेष्ठ माना है। जो देवताओं के लिये भी दुर्लभ है।

अयोध्या मथुरा माया काशी काँची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती च्चैव सप्तैते मोक्ष दायिकाः।।

लोक विख्यात सप्तपुरियों में मोक्षदायिनी अवन्तिका पुरी है।

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में एक भगवान श्री महाकालेश्वर उज्जैन में विराजित है। इसके साथ-साथ इन्हें समस्त मृत्युलोक के स्वामी के रूप में कहा गया है।

आकाशे तारकं लिंगं पाताले हाटकेश्वरम् ।
मृत्यु लोके महाकालं लिंग त्रय नमोस्तुते ।।

उज्जैन एक धाम के लिये सुप्रसिद्ध है। भारतवर्ष में देश के चारों दिशाओं में एक-एक धाम है। उज्जैन भारतवर्ष का नाभि क्षेत्र है यहाँ भी चारों धाम में विराजित मूर्तियाँ क्षिप्रा किनारे चार धाम मन्दिर में वैदिक विधि विधान के साथ प्राण प्रतिष्ठा करके विराजित है। प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में दर्शनार्थी आकर अपने को कृतार्थ करते हैं। उज्जैन जगत गुरु योगीराज भगवान श्री कृष्ण की शिक्षास्थली रहा है। महर्षि सांदीपनी का पवित्र गुरुकुल होने का गौरव प्राप्त है।

उज्जैन प्राचीन मन्दिरों का शहर है। गोपाल मंदिर, गढ़की कालिका, मंगलनाथ (यह स्थान मंगल की जन्म भूमि माना जाता है) भगवान हाटकेश्वर धाम, सिद्धवट, श्री हरसिद्धि देवी, चिन्तामन-गणेश, इस्कॉन मन्दिर, आदि कई मंदिर हैं।

पुण्य सलिला क्षिप्रा में नर्मदा का पवित्र जल भी अब प्रवाहित हो रहा है। अतः सिंहस्थ के समय दो पवित्र नदियों के जल में स्नान करने का श्रद्धालुओं को पुण्य प्राप्त होगा।

-गोवर्द्धनलाल व्यास
ऋषि नगर, उज्जैन

कागजों को एक साथ जोड़े रखने वाली पीन ही कागज को चुभती है।
उसी प्रकार जो इंसान परिवार और समाज को जोड़े रखता है वही इंसान परिवार-समाज को चुभता है।

मन्दिर की जगह गौशालाएं निर्माण कराईये

माँ...

नमो देव्यै महादेव्यै, सुरम्ये च नमो नमः।
गवां बीज स्वरूपायै, नमस्ते जगदम्बिके।।
नमो राधा प्रियाये, नमस्ते पद्मांशाये नमः।
नमः कृष्ण प्रियाये च, गवां मात्रे नमो नमः।।

गाय हमारी ही नहीं अखिल विश्व की माता है। 'गावो विश्वस्य मातर'। गाय हिन्दू तथा सम्पूर्ण मानव जाति की अभिन्न पारिवारिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक प्रतीक ही नहीं वह तो प्राण वल्लभा, हम सभी की माँ है। पूरी मानव जाति की जगत जननी है। गाय देश के उत्थान का महत्वपूर्ण सोपान है। पुराणों में 33 करोड़ देवी-देवता और 68 करोड़ तीर्थ गोमाता में प्रतिष्ठित बताये गये हैं। गौ मात्र एक चतुष्पदी पशु नहीं है, अपितु माता की तरह जीवन भर हमारी सेवा करती है महाभारत के एक आख्यान में युधिष्ठिर जवाब देते हैं कि गौदुग्ध अमृत है। पंच गव्य से अनेकानेक असाध्य रोगों का उपचार संभव है। 40 लीटर दूध में लगभग 10 ग्राम सोना पाया जाता है। जिससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसीलिये गौदुग्ध एवं गौघृत का रंग पीला होता है। जिस घर में गौ माता होती है उस घर का वास्तु दोष स्वतः ही समाप्त हो जाता है। गौघृत का एक नाम आयु भी है। श्रुती कहती है 'आयुर्वैघृतम' अर्थात् गौघृत के सेवन से व्यक्ति दीर्घायु होता है।

विद्युत का झटका लगने पर प्रभावित अंग पर गाय का गोबर का लेप किया जाय, तो उस अंग पर तुरंत लाभ होता है। पैगम्पर हजरत मोहम्मद सा. के अनुसार गाय का दूध रसायन, घी अमृत तथा मांस बीमारी है। गौमूत्र के सेवन से मलावरोध, कुष्ठ रोग, नैत्र रोग, सुजुकी, श्वास आदि अनेक रोगों में अत्यधिक लाभ होता है। गाय के ऐसे अनेकानेक गुणों के कारण गाय को एक 'आश्चर्यजनक चलित औषधालय Cow is wonderful mobile Laboratory' कहा जाता है।

गाय सुरक्षित तो मानव सुरक्षित

वस्तुतः गौ अवध्य है। किन्तु...

यह अत्यन्त दुःख के साथ आश्चर्य का विषय है कि गीता के अमर गायक गौभक्त भगवान श्री कृष्ण के देश में गौसंवर्धन तथा गौसेवा के गगन भेदी नारे तो लगाये जाते हैं, किन्तु देश की सैंकड़ों पशुवध शालाओं में प्रतिदिन गौमाता तथा बछड़ों को निर्ममता पूर्वक काटा जा रहे हैं। परिणाम स्वरूप भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्था के संयुक्त

निदेशक डॉ.राम स्वरूप चौहान के मतानुसार इस समय गायों की 60 में से मात्र 30 नस्लें ही शेष रह गई है। इसमें से भी 6 नस्लें विलुप्ती की कगार पर है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि भारत में चांदी-सोने का वर्क बनाने के लिये प्रतिवर्ष लगभग एक लाख सौलह हजार गोवंश का वध कर दिया जाता है।

इन्दौर न्यायालय में वर्क बनाने वाली कम्पनी ने इस तथ्य को स्वीकार किया है। यह तथ्य Beauty without Cruality पत्रिका और मेनका गाँधी के टेलीविजन शो Head & Tails में उभरकर सामने आया है।

अतः हमें किसी भी दशा में चाँदी-सोने के वर्क का उपयोग नहीं करना चाहिए।

उपरोक्त लाभों को दृष्टिगत रखते हुए न केवल लाभ के लिये अपितु देश के चहुँमुखी विकास एवं कल्याण के लिये गायों के संरक्षण, संवर्धन एवं पंचगव्य के सदुपयोग की ओर ध्यान देना होगा। यदि हमारे पास सुविधा है तो प्रत्येक हिन्दू को कम से कम एक गाय अवश्य पालना चाहिए। सुविधा विहीन परिवार को गोशाला निर्माण में यथाशक्ति सहयोग करें तथा सड़कों पर गली-गली भटक रही इन माताओं को उनका आहार अवश्य उपलब्ध करावें। बहुत हो गये मंदिर आज अब देश में मन्दिरों की नहीं गोशाला की नितांत आवश्यकता है। प्रत्येक नगर परिषद स्तर पर एक गोशाला का निर्माण आज की प्राथमिकता है।

आज यह आवश्यक है कि ईश्वर द्वारा भारतीयों को दिया गया इस दुर्लभ उपहार गोवंश का पूरा लाभ लेने के लिये उद्योगपति पंचगव्य से हर वस्तु निर्माण करें। ताकि गाय की महिमा और भी प्रगट हो सके।

सारांश यह है कि गोहत्या प्रतिबंध तथा गोसंवर्धन द्वारा हम किसान की समृद्धि, देशवासियों की स्वास्थ्य रक्षा, पशुधन की रक्षा, विदेशी मुद्रा विनिमय की प्रचुरता तथा रोजगार के नवीन अवसर प्राप्त कर सकते हैं। गोसंरक्षण एवं गो संवर्धन का ह्रास मानव जाति का ह्रास सिद्ध होगा।

अतः प्रत्येक भारतीय का पावन दायित्व है कि चाहे केन्द्र या राज्य में किसी भी दल की सरकार हो पर इतना प्रबल दबाव बनावे कि वह गोसंरक्षण बोर्ड, मंत्रालय का गठन कर सम्पूर्ण मानव जाति के आधार को सुरक्षित करना सुनिश्चित करें। गाय को बचाना ही देश को बचाना है। भारत को यदि विश्व गुरु बनाना है तो गौ मंत्रालय का गठन की सर्वोच्च मांग है।

-हरिनारायण नागर
(वरिष्ठ पत्रकार)
306, 'आशुतोष निकेतन', सन सिटी 2, इन्दौर रोड़, देवास
सम्पर्क 07272-259822, 9425948177

सूर्य नमस्कार से पूरे परिवार को लाभ

जैसा कि हम सदैव सुनते हैं पहला सुख निरोगी काया अर्थात् मनुष्य के समस्त सुखों में उसके स्वस्थ शरीर का ही सुख सर्वोपरि माना गया है। योग प्राचीनकाल से ही हमारा अभिन्न अंग है जो भारतवर्ष के व्यक्तियों को अमूल्य विरासत में मिला है। ऋषि-मुनियों ने योग को अपनाया जिससे वे ध्यान, एकाग्रता, संयम में नियंत्रण प्राप्त करते थे तथा योग के माध्यम से ही ज्ञानार्जन, प्रवीण स्मरण क्षमता एवं स्वस्थ दीर्घायु संभव हो पाता था।

योग की अद्वितीय महत्वता के कारण ही आज सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में योग ने अपना लोहा मनवाया है। पश्चिमी देशों के लोगों ने भी माना है कि योग उनके सुखद एवं स्वस्थ जीवन का मूल आधार बना है तथा योग अन्य विधियों एवं पश्चिमी तरीकों से कईं ज्यादा बेहतर है। पिछले वर्ष हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 21 जून को अन्तराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया है। इससे योग का प्रचार-प्रसार सम्पूर्ण विश्व में हो तथा इसकी उपयोगिता का लाभ प्रत्येक व्यक्ति को मिले। इस दिवस को 192 देशों के 251 शहरो में मनाया गया।

21 जून को दिल्ली राजपथ राजपथ पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी के नेतृत्व किया गया योग गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस में दर्ज किया गया है। लगभग 36000 लोगों ने विभिन्न योग क्रियाएं की। जिसमें 84 देशों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

पुरुषों महिलाओं और बच्चों के लिये सूर्यनमस्कार के लाभ-

बच्चों के सूर्य नमस्कार के कईं फायदे हैं। एक योग शिक्षक के मार्गदर्शन के साथ सूर्य नमस्कार के विभिन्न आसन-प्राणायम का प्रदर्शन कर सकते हैं। एठन, पीठ के निचले हिस्से में मासिक धर्म के दौरान रक्त का गंभीर नुकसान दिखना, जिन महिलाओं को मासिक धर्म की अवधि समय से पहले समाप्त हो गई है। इस सभी समस्याओं के

लिए सूर्यनमस्कार काफी लाभदायक है।

गर्भावस्था के दौरान पहली तिमाही तक सूर्यनमस्कार किया जा सकता है, लेकिन इनके पश्चात् बाकी के महिनों के दौरान इसे बंद कर देना चाहिए। सूर्यनमस्कार गर्भावस्था के दौरान आसान प्रसव को बढ़ावा देता है। प्रसव के पश्चात् महिला के स्वास्थ्य के आधार पर पुनः सूर्यनमस्कार प्रारम्भ किया जा सकता है।

घर में योग- सूर्यनमस्कार घर पर सुबह व शाम को दिया जा सकता है। सूर्यनमस्कार का प्रदर्शन करने की उचित विधि मार्गदर्शक से सीखना चाहिए। गठिया, स्लिपडिस्क हृदय रोग आदि के रोगियों को सूर्यनमस्कार प्रारम्भ करने से पूर्व विशेषज्ञ की राय ले लेनी चाहिए।

कमरे में यदि सूर्यनमस्कार करें तो वहां सूर्य का प्रकाश भी होना चाहिए। सूर्यनमस्कार चटाई पर करना चाहिए, चटाई नहीं हो तो नंगे फर्श पर भी किया जा सकता है। सूर्य नमस्कार योगासनों में सर्वश्रेष्ठ है। यह अकेला अभ्यास ही साधक को सम्पूर्ण योग व्यायाम का लाभ पहुँचाने में समर्थ है। इसके अभ्यास से साधक का शरीर निरोग और स्वस्थ होकर तेजस्वी हो जाता है। सूर्य नमस्कार, स्त्री, पुरुष, बाल युवा तथा वृद्धों के लिए भी उपयोगी बताया गया है।

(क्रमशः)

-दयाराम नागर
योग प्रशिक्षक,
सुमेरपुर

षोडश संस्कार और उपनयन

हमारी संस्कृति में संस्कार शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में हुआ है, फिर भी हिन्दू संस्कार पद 16 संस्कारों का बोधक है। जिसमें गर्भाधान से मृत्यु पर्यन्त के सभी संस्कार आ जाते है। इन्हें पांच भागों में भी बाँटा गया है।

(1) पूर्वजन्म- संस्कार, (जो जन्म से पहिले किये जाते हैं।) **2. बाल्य-** संस्कार, **3. शिक्षा-** संस्कार, **4. विवाह-** संस्कार, **5. अन्त्येष्टि-** संस्कार

पूर्वजन्म संस्कार- इसका आशय है बालक के जन्म के पूर्व जो संस्कार किये जाते हैं। इसमें प्रथम है- 1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जात-कर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. कर्ण-वेध, 9. चौलम, 10. विद्यारंभ, 11. उपनयन, 12. वेदारम्भ, 13. मेधाजन, 14. समावर्तन, 15. विवाह, 16. अन्त्येष्टि।

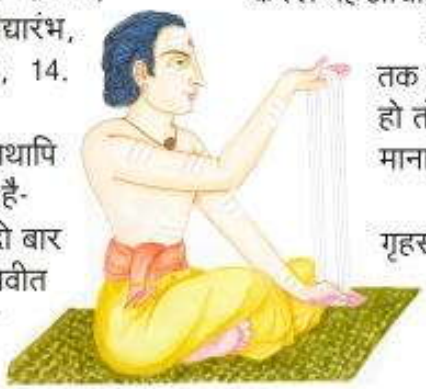

सभी संस्कारों की अपनी ही महत्ता है, तथापि उपनयन-संस्कार इन सब में महत्वपूर्ण माना गया है-

उपनयन-संस्कार- द्विज शब्द का अर्थ है दो बार जन्म अर्थात् एक बार गर्भ में जन्म दूसरा यज्ञोपवीत संस्कार से- 'द्वाभ्यां जन्म संस्काराभ्यां जायते इतिद्विज' धर्मशास्त्र यानी 'हिन्दू लॉ' का यहाँ तक कथन है कि संस्कार विहीन व्यक्ति को द्विज समाज से बहिष्कृत कर देना चाहिए। उसे सामाजिक सुविधाएं न दी जाएं। आधुनिक युग में कुछ संस्कार लुप्त हो गये हैं कुछ प्रकारान्त से चल रहे हैं। जन्म पूर्व के संस्कार, बाल्यावस्था संस्कार इन में आते हैं शेष बचे-यज्ञोपवीत-विवाह अन्त्येष्टि, ये मुख्य रह गये हैं।

उपनयन का अर्थ- आचार्य के समीप जाना था। यह अर्थ शिक्षा दान से सम्बन्धित है, पर आज यह मात्र धार्मिक रह गया है।

वेदारम्भ या शिक्षा का अर्थ पूर्णतया लुप्त हो चला है।

आयु- ब्राह्मण बालक का संस्कार 8वें वर्ष क्षत्रिय बालक का संस्कार 11वें वर्ष, वैश्य बालक का संस्कार 12 वर्ष में निश्चित था। आज किसी भी वर्ण के लिये कोई भी अवस्था विशेष का बन्धन नहीं है। केवल नागर बालक अभी इस आयु का पालन कुछ अंशों में कर रहे हैं, जिनकी संख्या भारत के अन्य ब्राह्मणों से श्रेष्ठ मानी जा सकती है।

उपनयन- संस्कार को विशेषकर यज्ञोपवीत कहा जाने लगा, क्योंकि जनेऊ धारण आवश्यक माना गया।

समय- ब्राह्मण के लिये सबसे अच्छा समय बसन्त ऋतु लिखा है। क्षत्रिय को ग्रीष्म-वैश्य को शरद। किन्तु यह निर्धारण शिथिल हो गया है।

नियम- उपनयन में ब्रह्मचारी के लिये नियमों का विधान है। वह दण्ड-कमण्डल-मृग-चर्म लेकर विष्णु पं.के अनुसार धन की कामना से छठे वर्ष में यज्ञोपवीत करें, सप्तम वर्ष में विद्याकामना वाला, सर्व काम की इच्छा वाला अष्टम वर्ष, कान्ति चाहने वाला नवम वर्ष में करें।

कुछ छठा वर्ष ठीक नहीं मानते- 'आषोडशाद् ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते'।

मनु के अनुसार- गौड़ काल 16 वर्ष तक हैं, इसके पश्चात् सावित्री प्राप्ति का निषेध है। समय-माघ से ज्येष्ठ पर्यन्त 5 मास शुभ माने गये हैं।

वाराह पुराण का कथन है कि-

1. जन्म नक्षत्र में यज्ञोपवीत न करें। 2. जन्म के महीने में न करें। 3. जन्म दिवस में न करें। 4. ज्येष्ठ लड़के का ज्येष्ठ मंगल कार्य ज्येष्ठ में न करें।

जन्म के मास तिथि और नक्षत्र में पक्ष का भेद हो तो मंगल कार्य कर लें यह आचार्य गर्ग-भार्गव-शौनक का कथन है।

यज्ञोपवीत- वशिष्ठजी का मत है कि नाभि के ऊपर तक जनेउ रहे तो आयु की हानि होती है, नाभि से नीचे हो तो तपस्या क्षीण होती है, नाभि तक का जनेउ शुद्ध माना है।

कितने जनेऊ पहिने-ब्रह्मचारी एक, वान-प्रस्थी-गृहस्थी दो, सन्यासी एक धारण करें। पहले जनेऊ भोजन करने के बाद नहीं बनाते थे। वह ठीक नहीं माना जाता।

कैसे पहिने 10 बार गायत्री मंत्र पढ़कर ऊपर हाथ में धारण करें और पहिने।

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं,
प्रज्ञापतेर्यत् सहजं परस्तात् ।
आयुष्यभ्रग्यं प्रति मुंच शुभ्रं,
यज्ञोपवीत बलमस्तुतेजः।।

चतुर्वेदियो के आश्वलायन गृह्य सूत्र के आधार पर 9 तन्तुओं में 9 देवगण हैं-

ओकार	सोम	वायु
अग्नि	पितर	सूर्य
नाग	प्रजापति	विश्वेदेव

गायत्री- गायत्रीमंत्र पहली बार जब दें तो 'तत्सवितुर्वृणीमहे' बुलवाये बटुक से। गायत्री मंत्र पिता देवे या पूज्य आचार्य से दिलावे।

मथुरा में कांसे की थाली में सोने की सींक से चन्दन से गायत्री लिखी जाती है। चावलों से ढककर उसकी पूजा कराने का विधान है।

इस प्रकार से चौलादि नव संस्कार इसी समय हो जाते हैं। अतः उनकी आहुतियां दी जाती है।

3 वेदी- आज से 50 वर्ष पूर्व से देखा है कि आचार्य 3 वेदी बनाते, एक पर चौल कराते, दूसरी पर यज्ञोपवीत संस्कार, तीसरी पर समावर्तन, अब सब कुछ एक ही वेदी पर एक ही दिन में सम्पन्न होता है।

आचार्य पं.सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ) इन्दौर म.प्र.
हस्त रेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद

चाय का VIP कनेक्शन

प्रिय पाठकों, विषय पर पूर्व में भी थोड़ा बहुत वर्णन किया गया था एवं जो बच गया उसे यहाँ पूर्ण करने का प्रयास कर रहा हूँ। पूर्व में चाय के होने और ना होने की चर्चा की थी। चाय का नाम आते ही हर चाय प्रेमी के भीतर एक अजीब सी उमंग जाग्रत हो जाती है। जैसे पूनर्जन्म हुआ हो। वैसे कहते हैं कि चाय का चलन हमारे देश में अंग्रेजों ने शुरु किया था और इससे पहले चाय प्रचलित नहीं थी, परन्तु वास्तविकता तो यह है कि हजारों वर्ष पहले से मौजूद थी। किन्तु उसका नाम वानस्पतिक था। अर्थात् संजीवनी बूटी था। जड़ी-बूटी का नाम आते ही मुझे याद आया कि जब लक्ष्मण जी को शक्तिबाण लगा था और वे मूर्छित हो गये थे तब श्री हनुमानजी जो जड़ी-बूटी लाए और उस से लखन की मूर्छा दूर हुई थी वो बूटी और कुछ नहीं बल्की हमारी आधुनिक चायपत्ती थी जो कालान्तर में एक प्रिय पेय के रूप में प्रचलित हुई। चाय का नाम आते ही हर व्यक्ति (अमुमन) के भीतर एक अजीब सी चेतना जाग्रत हो जाती है। मानो पुनर्जन्म हुआ हो।

तो व्ही आई पी कनेक्शन की बात करें तो आप जानते ही हैं कि हमारे माननीय प्रधानमंत्रीजी ने भी स्वीकार किया है कि उन्होंने भी रेल्वे में चाय बेचने का कार्य किया था एवं आज भी उन्हें चाय से काफी लगाव है। उनके इस चाय-प्रेम के कारण कई कार्टून भी प्रसारित हुए या यूं कहें कि चाय की केतली का सर गर्व से और ऊँचा हो गया कि हमारे प्रिय-प्रधानमंत्रीजी ने उसे अपनाया और दोनों का प्रचार हुआ। अभी-अभी दैनिक भास्कर में एक समाचार प्रसारित हुआ था, जिसमें म.प्र. के माननीय मुख्यमंत्री को चाय की इच्छा हुई तो उन्होंने निजी यात्रा के दौरान संपत्लिक चूल्हे पर चाय बनाई और उनका चाय बनाते हुए फोटो भी अखबार में प्रसारित हुआ। यूं तो हमारे परिवारों में कई गृहणियां चूल्हे पर चाय बनाती है। पर उनका फोटा अखबारों में शायद ही किसी ने देखा होगा, क्योंकि वे वीआईपी तो नहीं है। और तो और कई हाउस-हसबैण्ड अर्थात् कर्मठ पति लोग घरों में अपनी वाईफ के लिये रोज चाय बनाते होंगे और सर्व करते होंगे, परन्तु उनका चित्र कभी न्यूज पेपर में नहीं छपता, क्योंकि वो वीआईपी नहीं होते। तो यदि कोई वीआईपी चाय बैचे या चूल्हे पर चाय बनाये तो मीडिया को एक ब्रेकिंग न्यूज मिल जाती है एवं उसे बढ़ा-चढ़ा कर प्रसारित कर देते हैं। मानो हेड-लाईन न्यूज है। हम तो घर में रोज चाय बनाते हैं। एवं परिजनों को सर्व करें। मेहमानों को भी पिलाते हैं, किन्तु मजाल है हमारा फोटो कभी अखबारों में तो क्या घर की एलबम में भी मिलता हो या श्रीमति जी के मोबाईल में वालपेपर की तरह रेकार्ड हुआ हो। तो कई बार मन में आता है कि काश हम भी वीआईपी होते तो हमारी फोटो अखबारों में छा जाती और हमारा चाय के प्रति स्नेह देश में मशहूर होता। पर क्या करे कम्बख्त नसीब ही ऐसा है कि खूब चाय बनाओ और पिलाओ, किन्तु पब्लिसीटी नहीं मिलेगी।

वैसे साधारण तौर पर भी कोई व्यक्ति किसी को अपने घर पर बुलाने का आग्रह करता है तो भी वह चाय का ही जिक्र करता है कि 'कभी हमारे यहाँ चाय पर अवश्य पधारें' कोई यह कहता नजर नहीं आयेगा कि कभी आप भी हमारे घर पर दूध पीने या गन्ने का रस पीने या कोल्ड्रींक पीने अवश्य पधारें। यहां चाय पर ही इनवाईट करेंगे। फिल्मों में भी चाय का जिक्र ही हुआ है और तभी एक फिल्मी गीत प्रस्तुत किया गया है कि शायद मेरी शादी का खयाल दिल में आया है इसीलिए मम्मी ने मेरी तुम्हें चाय पे बुलाया है।'

-यशवंत नागर
(सहायक आयकर आयुक्त (से.नि.)
(बाँसवाड़ा वासी), उज्जैन
फोन 0734-2533151,
चलते-फिरते-8989219599

नित्य दर्शन

ईश्वर नित्य दर्शन देता
रूप बदल के आता है
पहचान नहीं तुम पाते उसको
मंदिर-मस्जिद जाते हो
आत्म शांति के लिये
रोज तुम पूजा अर्चन करते हो
सच्चे रूप क्यों नहीं दिखता
यह इंसान का प्रश्न है
कर्म तुम्हारे खोटे है
स्मृति हर के आता है
यथार्थ रूप में दर्शन दे दो
यह इंसान हर चाहता है।
असली रूप में दर्शन दे दिये
तो चरण पकड़कर वर मांगेगा
किस्मत में नहीं लिखा है
तो वरदान कहां से मिल जाएगा
यही तालमेल बैठ नहीं पाती
इच्छा अधूरी रह जाती
माया जाल में फंसा है मानव
मन में कपट को रखता है
इसीलिये ही रूप बदलता
और दर्शन रोज देता है।

-प्रमोद जोशी
170, गुलाब बाग कॉलोनी, इन्दौर

सुविचार-
विचार, वाणी और व्यवहार में सच्चे बनो।
आत्म परीक्षण
दूसरों का कल्याण
प्रभू वरद्
हस्त ही स्वयं की
अद्भूत पूंजी होगी।

P.

सच्चे सुख की प्राप्ति

मनुष्य जीवन बहुत ही दुर्लभ है और बहुमूल्य भी है। यह अनमोल इसलिए है, कि इसी के द्वारा हम शाश्वत सच्चे सुख की प्राप्ति कर सकते हैं। सच्चे सुख की प्राप्ति से हमारा मन शान्त, प्रसन्न तथा आनन्द में मग्न रहता है। आज हम सभी अशांत और टेन्शन में रहते हैं। सुख के बजाय आज अधिकतर मनुष्य दुःख, असंतोष, संघर्ष, मानसिक तनाव, असुरक्षा, व्याधिग्रस्त तन व भयभीत मन की अवस्था में ही जी रहे हैं।

आज का मानव सबसे ज्यादा अपने आप से परेशान है। इसका कारण तो भौतिक सुख साधनों को अधिक से अधिक प्राप्त करने की लालसाएं हैं। किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के बाद भी असंतुष्ट रहना, ईर्ष्या करना, दूसरों को सुखी देखकर दुखी होना। इस तरह की भावनाओं के कारण सुख के मोती को बिखेरते जा रहा है।

संसार के बहुत से लोग दिन रात अपने जीवन को सुखी करने के लिए सत्ता, पद, धन, घर, जमीन, स्त्री, आभूषण, मोटर, बाग-बगीचे, नाम, मान प्रतिष्ठा आदि आरामदायक स्थितियों को प्राप्त करने के लिए सारी शक्ति लगा देते हैं और मिल जाए तो प्रसन्न भी होते हैं। परन्तु सब प्राप्त करने के बाद भी उन्हें अशान्त व दुखी देखा जाता है। उदाहरण के लिए धन को ही लेते हैं। अधिक से अधिक धन प्राप्त करने के लिए भाग रहे हैं। धनोपार्जन बुरी बात नहीं है। पहले भी लोग करते थे, परन्तु उनकी हमेशा धार्मिक भावना रहती थी। दीन-दुखियों की सहायता करना रहता था।

आज का मानव भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिए धनोपार्जन कर रहा है। धन से हम भौतिक सुख, मनोरंजन के साधन तो खरीद सकते हैं। परन्तु सच्चा सुख नहीं। किमती बिस्तर खरीद सकते हैं, परन्तु सच्ची नींद नहीं। दवा खरीद सकते हैं स्वास्थ्य नहीं। पुस्तकें खरीद सकते हैं, परन्तु ज्ञान नहीं।

धन अगर सुख देने में समर्थ होता तो धनवान भी दुखी नहीं होता। परन्तु हममें आज एक बुरी आदत हो गई है कि हमें अन्य में कमी दिखाई देती है। लोग कहते हैं कि सुख हमारे भाग्य में है ही नहीं। ईश्वर ने हमें यहाँ दुख भोगने के लिए नहीं भेजा। वे भी हमें अपार सुख से भरा हुआ देखना चाहते हैं। उन्होंने हमें शारीरिक, भौतिक व आत्मिक शक्तियों से भरकर भेजा है। हमें इसकी ओर ध्यान देना है। उसका सदुपयोग करना है। फिर देखिए सभी जगह कैसे आपका जीवन बगियां की तरह महक उठेगा। सुख और शान्ति के फूल खिलने लगेंगे।

दुख में सुमिरन सब करें,
सुख में करें ना कोय।
जो सुख में सुमिरन करें,
तो दुख काहे को होय।

-अर्चना याज्ञिक
बड़ौदा, मो. 9574993479

लघुकथा

नीचा दिखाना

प्यारेलालजी के बारे में अधिकतर सभी जानते थे कि वे जरूरतमंद की सहायता करते हैं। एक दिन एक परिचित उनके पास आए और उनसे एक सौ रूपये उधार मांगे। वे एक बड़ी पहुंची हुई हस्ती थे और पीठ पीछे उधारीमल के नाम से प्रसिद्ध थे। प्यारेलाल जी जानते थे कि उधार न लौटाने के मामले में उसकी ख्याति फैली हुई है फिर भी उन्होंने उसे सौ रूपये दे दिए। उधारीमल ने एक सप्ताह में लौटाने का वादा किया था, पर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उधारीमल ने तीसरे दिन ही उन्हें रूपये लौटा दिए। चार पांच दिन ही बीते होंगे कि उधारीमलजी घर आ धमके और उनसे पांच हजार रुपये के लिए मिन्नतें करने लगे। प्यारेलालजी ने रूपये देने में असमर्थता प्रकट की तो वे थोड़े तमक कर बोले-क्यों ! क्यों नहीं दे रहे ? क्या मैंने तुम्हें पिछली बार रूपये नहीं लौटाए थे ? हाँ... प्यारेलाल ने कहा पिछली बार मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम रुपये लौटा दोगे पर तुमने मेरी सोच को गलत साबित करके मुझे नीचा दिखा दिया अब मैं फिर से दुबारा नीचा देखना नहीं चाहता। प्यारेलालजी उसकी बड़ा चूना लगाने की चाल भाँप गए थे और उससे पहले की उधारीमल कुछ सोच पाते या बोल पाते वे हाथ जोड़ कर खड़े हो गए और ड्रॉइंग रूम से उठ कर चल दिए।

-आशा नागर
सी- 12 / 9 , ऋषिनगर , उज्जैन

लखनऊ निवासी श्रीमती विद्यावती एवं स्वर्गीय प्रताप नारायण की पोती, श्रीमती विद्या एवं श्री विष्णुकुमार याग्निक की पुत्री सौ. शिखा याग्निक का शुभ विवाह दोसा राजस्थान निवासी स्वर्गीय आशा नागर एवं श्री विश्वप्रिय नागर के पोते, श्रीमती कल्पना नागर एवं श्री अविनाश नागर के पुत्र चिरंजीव अंकित नागर के साथ दिनांक 4 फरवरी 2016को अशोका मैरिज लॉन दौसा में परिजनों एवं ईस्ट मित्रों की उपस्थिति में सानंद संपन्न हुआ.

श्री दिनेश पंचोली

श्री दिनेश पंचोली सुपुत्र- स्व. श्री शंकरलाल पंचोली का लम्बी बीमारी के पश्चात् दिनांक 30 अप्रैल 2016 को निधन हो गया। उन्होंने लम्बे समय तक मध्यप्रदेश विद्युत मण्डल में अपनी सेवाएं दी। उनकी ख्याति एक समर्पित लगनशील मैकेनिक की थी। स्वभाव से वे अत्यंत सहज सरल व्यक्ति थे और दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते थे। वे श्री विजेश के पिताश्री तथा चि.कुणाल के दादाजी थे। शोक-सभा में अनेक समाजजनों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रीमती कांता नागर, नागदा

बिरलाग्राम नागदा निवासी डॉ.कृष्णवल्लभ नागर की धर्मपत्नी श्रीमती कांता नागर का स्वर्गवास 8 अप्रैल 2016 को हो गया। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। सुपुत्र विजय नागर एवं अजय नागर ने दुख की घड़ी में सम्बल देने पर समाजजनों का आभार व्यक्त किया है।

श्रीमती माया जोशी, उज्जैन

उज्जैन निवासी श्रीमती माया (शेवन्ती) जोशी पत्नी श्री दिनेश जोशी का स्वर्गवास 25 मार्च 2016 को हो गया। भगवान हाटकेश्वर इनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

विनम्रता की प्रतिमूर्ति- पं.रमेश प्रसादजी रावल

पं.रमेशप्रसादजी रावल (सुपुत्र- पं.श्री सिद्धनाथजी शर्मा-श्रीमती ताराबाई) पिपलोदा का देवलोक गमन 25 अप्रैल 2016 को हो गया। पं.रावल ने जीवन निर्माण में जो संघर्ष किया, वह विनम्रता एवं सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के रूप में परिलक्षित हुआ। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा रतलाम से पूर्ण की तथा उसके बाद इन्दौर आ गए तथा सेल्फ मेड का संकल्प लेकर आगे की पढ़ाई ट्यूशन पढ़ाकर उससे प्राप्त आय से पूर्ण की। यह संयोग ही था कि एम.ए. एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् वे राज्य सेवा परीक्षा एवं बैंकिंग परीक्षा में एक साथ उत्तीर्ण हुए, तत्पश्चात उन्होंने बैंकिंग को ही करियर के रूप में चुना तथा प्रथम पदस्थापना के अंतर्गत बैंक ऑफ बड़ौदा की ए.बी.रोड़ शाखा की स्थापना का दायित्व सफलता पूर्वक पूर्ण किया, तत्पश्चात् नौकरी में पिसांगन, पेटलावद, निम्बाहेड़ा, प्रतापगढ़, पुष्कर आदि में ब्रांच स्थापना एवं संचालन का कार्य पूरी ऊर्जा एवं उत्साह से किया। सन् 2000 में आपने वरिष्ठ प्रबंधक पद पर रहते वीआरएस ले लिया तथा पूरी तरह समाजसेवा हेतु समर्पित हो गए।

प्रत्येक पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यक्रम में वे पूर्ण मनोयोग से उपस्थिति दर्ज कराते तथा पूरी प्रसन्नता के साथ छोटे-बड़े सबके साथ मिलते। किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में प्राप्त दायित्व को वे प्रसन्नतापूर्वक तन-मन-धन से निभाते। सौम्यता एवं विनम्रता उनके आभूषण थे। अभी पिछले कुछ दिनों से वे बीमारी की चपेट में आ गए थे तथा जब तक शारीरिक रूप से सक्षम रहे, वे कार्यक्रमों में जाते रहे, 25 अप्रैल 2016 को जब उन्होंने अंतिम सांस ली तो समझो यह नागर ब्राह्मण समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति वाला दिन था। समाज ने एक प्रसन्नमुखी तथा उत्साही कार्यकर्ता खो दिया। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं- पं.नवदुर्गा प्रसाद रावल (वरिष्ठ भ्राता) श्रीमती सुमन रावल (धर्मपत्नी) भावेश-सौ.अंजली रावल (पुत्र-पुत्रवधू) सुपुत्री-दामाद- सौ.अलका-अक्षय मेहता (बड़ोदरा) सौ.सरोज-अजय नागर (सुखेड़ा) सौ.प्रीति विजय नागर (उदयपुर) सौ.हेमा-हर्ष मेहता (इन्दौर) निश्चित रूप से सद्भावना एवं आशीर्वाद के रूप में अब परिवार तथा समाज के साथ अमर रहेंगे।

श्री संजय जोशी, इन्दौर

श्री संजय जोशी सुपुत्र स्व. श्री माधवरावजी जोशी, राजीव आवास विहार, इंदौर निवासी का स्वर्गवास इन्दौर में हृदयाघात से दिनांक 16अप्रैल 2016को अल्पायु 51 वर्ष में हो गया। वे मूलतः ऋषि नगर उज्जैन निवासी थे। आप इन्दौर में विनोद इस्पात प्रायवेट लिमिटेड में विगत 25 वर्षों से कार्यरत थे। उनकी एकमात्र पुत्री 15 वर्षीय मानसी है जो हाई स्कूल में अध्ययनरत है। श्री जोशी अत्यंत ही सरल, मृदुभाषी, निर्भीक एवं खुशमिजाज के व्यक्ति थे। सादगी, संवेदनशीलता एवं दयालुता के गुणों से ओत-प्रोत श्री जोशी का अंतिम संस्कार चक्रतीर्थ उज्जैन में किया गया। अंतिम यात्रा में समाजजनों, इष्ट मित्रों, एवं इन्दौर से श्री दिनेश धनोटिया एम.डी. विनोद इस्पात, इन्दौर, डॉ. नरेंद्र मेहता, श्री सुधीर जोशी, डॉ. सुशील जोशी, श्री ज्ञानप्रकाश व्यास आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की तथा हाटकेश्वर से प्रार्थना की कि वे स्व. जोशी की आत्मा को शांति प्रदान करें तथा परिवार को इस दुखद घड़ी में सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

-प्रेषक-डॉ. नरेंद्र कुमार मेहता, उज्जैन

'कैलाश' पर्वत सा था उनमें आत्मबल

श्री कैलाशनारायण नागर
जन्म 29-10-1942
अवसान- 15-4-2016

तोपखाना, उज्जैन निवासी स्व.श्री आनन्दीलालजी-श्रीमती रुक्मणीबाई नागर के सबसे छोटे सुपुत्र श्री कैलाश नारायणजी नागर का देहावसान 15 अप्रैल 2016 को हो गया। श्री नागर बीएचईएल की नौकरी के सिलसिले में बरसों पहले भोपाल में स्थापित हो गए थे, उन्होंने 36 वर्षों तक नौकरी के पश्चात् सेवानिवृत्त जीवन को समाज एवं अध्यात्म को समर्पित कर दिया। अत्यन्त सौम्य एवं सरल स्वभाव के श्री नागर का आत्मबल कैलाश पर्वत सा मजबूत था। बीमारियों का उन्होंने जिंदादिली से मुकाबला किया तथा पूरा जीवन खुद्दारी एवं प्रेरणादायी जिया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। जय हाटकेश वाणी परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उन्हें अपने चरणों में स्थान प्रदान करें।

-सुभाष नं. व्यास, भोपाल

श्रीमती बसन्तीबाई व्यास, इन्दौर

व्यास परिवार (हातोद वाले) श्री शरद व्यास, श्री शैलेन्द्र व्यास की माताजी श्रीमती बसन्तीबाई पति स्व.श्री आनन्दीलालजी व्यास का देवलोक गमन 15 अप्रैल 2016 को हो गया। रिश्तेदारों एवं समाजजनों ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

महमूरगंज, वाराणसी निवासी श्री जयराम नागर पुत्र स्व श्री मुकुन्दलाल दवे (मम्मू काका) का निधन दिनांक 07 अप्रैल 2016को हो गया। आप युनियन बैंक आफ इंडिया से सेवा निवृत्त हुये थे।

श्रीमती इच्छा नागर, कोलकाता

बिहारीपुरा, मथुरा निवासी गं स्व इच्छा नागर (इच्छा माशी) पत्नी स्व श्री अनन्तराम दीक्षित का कोलकाता में संक्षिप्त बीमारी के कारण 26 मार्च 2016 को निधन हो गया । आप बेहद मिलनसार, गृहकार्य में दक्ष व मेहनती थी। पति के मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाने पर आपने अपनी चार पुत्रियों का विवाह मथुरा जिले के प्राथमिक स्कूल में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के तौर पर सेवा की। आप में हिम्मत व साहस कूट कूट कर भरा था। वर्तमान में आप कोलकाता में अपनी पुत्रियों के पास रहती थी।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

प्रथम पुण्य स्मरण

स्व.कुन्तादेवी नागर
धर्मपत्नी- पं.सदाशिव नागर
श्रद्धावनत- श्रीमती जमुनादेवी नागर
शीलादेवी-पं.नागेश्वर नागर
भगवतीदेवी-पं.दिनेश नागर
उमादेवी-पं.गजानंद नागर
पवित्रा-ज्ञानेश्वर नागर
राधा-पं.आशुतोष नागर
महेश, गिरजाशंकर, अभिषेक, उमेश,
उज्जवल, अनिरुद्ध समस्त नागर परिवार
रथभंवर जिला शाजापुर मो. 9752153528

स्व.कुन्तादेवी नागर
देवलोक गमन 22 मई

ज्योतिष का देदिप्यमान नक्षत्र थे पं.बृजेन्द्र नागर मेहता

कथा मर्मज्ञ पं.लक्ष्मीनारायणजी नागर (लूणजी दासाब) के भरे-पूरे संस्कारित परिवार में शाजापुर के ग्राम रंथभंवर (किसोनी) में कार्तिक पूर्णिमा दि. 25 नवम्बर 1931 को जन्मे पं.बृजेन्द्र नागर की प्राथमिक शिक्षा-दीक्षा शाजापुर में स्व.शास्त्री जानकी वल्लभजी मेहता के सानिध्य एवं अपने अग्रज स्व.डॉ.नरेन्द्रजी नागर, कृष्णवल्लभजी मेहता तथा अनुज डॉ.रामकृष्णजी मेहता के साथ सम्पन्न हुई, जिसके तहत आपने संगीत, भजन-कीर्तन, कथा, पूजा-पाठ विधि-विधान, प्रारम्भिक संस्कृत आदि की शिक्षा ग्रहण की।

तदोपरान्त तत्कालीन जावरा स्टेट द्वारा जावरा में संचालित गुरुकुल में स्व.पं.रघुनंदनजी श्रोत्रिय के सानिध्य में वैदिक ज्ञान, संस्कृत व्याकरण, पूजा-पाठ आदि की आगामी शिक्षा पूर्ण की। इस दौरान भी आपके साथ स्व.श्री ईश्वरलालजी त्रिवेदी, स्व.सूर्यकान्तजी पौराणिक, स्व. रामभरोसेजी नागर, स्व.डॉ.मदनमोहनजी श्रोत्रिय, डॉ.विश्वनाथजी श्रोत्रिय, सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.प्रभाकरजी श्रोत्रिय आदि समाज की नामचीन हस्तियों का साथ रहा। इसके पश्चात् आपकी ज्योतिषीय शिक्षा अनकरीब 70 वर्षों तक अनवरत चलती रही।

किसी भी समारोह अथवा यात्रा के लिए पर्याप्त समय पूर्व पहुँचना उनका एक और गुण था और जिसके अमल के लिए सभी को प्रेरित करते। सहज व सरल इतने कि बच्चों के साथ भी अत्यन्त आत्मीयता के साथ घुल-मिल जाते और सामान्य के अलावा धार्मिक मान्यताओं, आध्यात्मिकता आदि के सम्बन्ध में उनकी जिज्ञासाओं को तर्क के साथ शांत करते। घर पर भी प्रायः परिजनों को इकट्ठा कर, पौराणिक आख्यान, दृष्टान्त व संस्मरण सुनाते, वह भी इतने जीवन्त कि उपस्थित समुदाय को उस काल की अनुभूति होने लगती। उज्जैन के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी पं.आनन्दशंकरजी व्यास के पिता पंचाङ्गकर्ता स्व.पं.सूर्यनारायणजी व्यास के भाई मुर्धन्य ज्योतिषी स्व.पं.संकर्षणजी व्यास तथा स्व.तेजकरणजी की छत्रछाया में सम्पन्न हुई।

ज्योतिष ज्ञान, संगीत-कथा, पूजन-पाठ विधि विधान, वैदिक ज्ञानादि अध्ययनोपरान्त आपने इन्हें अपनाया भी और सीखते भी गये। जिससे लोकप्रियता में भी अभिवृद्धि हुई। इसी दरम्यान तदसमय के खादी आन्दोलन से प्रेरित होकर 60 के दशक में समाज के ख्यात पत्रकार श्री प्रेमनारायणजी नागर की प्रेरणा से कुछ समय शिवपुरी में तथा बाद में उज्जैन के खादी ग्रामोद्योग संस्थान में सेवा दी।

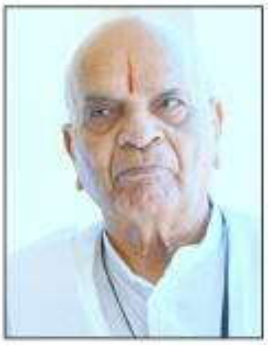

इसी के साथ शहर के बुधवारिया स्थित श्री सूर्यनारायण मंदिर में पूजा अर्चनादि के अलावा छत्री चौक स्थित सिन्धिया स्टेट के गोपाल मंदिर (श्री द्वारिकाधीश मंदिर) में एकादशी पर कथा सहित ग्राम कल्लुखेड़ी, भटूनी (मक्सी), पैतृक गांव रंथभंवर आदि में एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा व अन्य विशेष उत्सवों पर कथा, भागवतजी, भजन-कीर्तन, पूजन, ज्योतिषादि का क्रम भी चलता रहता, किन्तु इन धार्मिक व आध्यात्मिक गतिविधियों में अधिक रुझान रहने व खादी ग्रामोद्योग की नौकरी से इनमें अथवा इनसे नौकरी में व्यवधान आने से मण्डल की सेवा छोड़ आपने अपना ध्यान पूर्ण रूप से इस ओर लगा लिया। नियमित अभ्यास अध्ययन प्रस्तुति व समय के साथ इसमें अधिक निखार आता गया। इस दिशा में आप स्वयं भी कुछ जिज्ञासुजन को प्रारम्भिक, किन्तु महत्वपूर्ण ज्ञान सौंप गए हैं, ताकि वे इसमें और शोध व प्रसार कर, सनातन विद्या की इस ज्योत को आगे भी प्रज्वलित रख सकें।

लगभग 15 वर्ष पूर्व क्षीर सागर (उज्जैन) स्थित श्री सत्संग भवन में पूज्य माता किशोरीजी की प्रेरणा व सानिध्य में भक्ति की जो लौ लगी, वह माताजी के स्वर्गारोहण के बाद भी आजीवन प्रज्वलित रही, जिसमें समय के साथ-साथ कई सुधिजन जुटते चले गए। प्रामाणिक कथा, भागवतजी प्रस्तुत करने की उनकी अपनी शैली थी, तो ज्योतिष विद्या पर भी पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपना निर्णय देते और इसी क्रम में लब्ध-प्रतिष्ठित ज्योतिष मनीषियों की टिप्पणियों को भी दृढ़ता से नकारते या उनके ज्योतिषीय, आध्यात्मिक व तार्किक, किन्तु प्रमाणिक व सटीक परिहार बताते, जिनके परिणाम जातकों के साथ-साथ सभी को अचम्भित करते। कई द्वारों से असन्तुष्ट जन उनसे संतुष्ट होकर निकलते, तो उन्हें आत्मिक खुशी होती। इन कर्म-काण्डों के दौरान सामान्य व प्रतिष्ठित जनों के साथ ही आपको 'राम दरबार' के शर्मा बन्धुओं (सूरज की गर्मी से जलते हुए...) के उज्जैन में निर्मित भवनों का वास्तु-पूजन भी आपके प्रधान आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

परिवार में सबको जोड़े रखने, साथ लेकर चलने तथा सामाजिक व्यवहार निभाने जैसे पैतृक संस्कार आपको अपने पिता (मिस्टर दासाब) से विरासत में मिले और इसी विरासत का विश्वास लिये अत्यल्प बीमारी के बाद 26 मार्च 2016 को ब्रह्मलीन हुए। यही और अन्य (जो विस्तार भय से देना सम्भव नहीं) कारण थे कि उनके चाहने वाले हर वर्ग (कथा-वाचक, ज्योतिषी, उद्यमी, व्यवसायी, वकील, डॉक्टर्स, इंजीनियर्स, नौकरीपेशा, बच्चों-बड़ों) के साथ ही समीपस्थ प्रदेशों (राजस्थान, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली आदि) तक में थे।

जन्म कर्मच में दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामिति सोऽर्जुन।।
(श्रीमद् भगवत् गीता 4/9)

वस्तुतः आपने ईश्वर प्रदत्त चादर को उम्र भर ओढ़ा, सहेजा, संवारा और जीवन संध्या-काल में ज्यों की त्यों प्रभु को ही सौंप दिया।

कबीर! जब हम पैदा हुए, जग हँसे, हम रोय।
ऐसी करनी कर चले, हम हँसे जग रोय।।

ईश्वर में विलीन होते-होते चेहरे पर ऐसे शान्त भाव थे, जैसे सब कुछ (गोविन्द) पा लिया हो।

उनके सद्विचार, संस्कार, स्मृतियाँ, आशीष व आदर्श सदैव हमारा पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे।

सादर भावांजली।

स्मृति संयोजन- भ्राता डॉ.रामकृष्णजी मेहता (इन्दौर) व श्री योगेश मेहता तथा पुत्रगण यशवन्त व प्रदीप एवं अन्य स्वजन।

104, अंकपात मार्ग, मीणा धर्मशाला के सामने, उज्जैन (म.प्र.)

RYDAK®

(RED)

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

71, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

पंचम पुण्य स्मरण

सिद्धांतों की नींव रखी
कर्मठता से पहचान बनाई
जीवन पथ के कठीन क्षणों में
आपके आदर्शों ने ही राह दिखाई

स्व.श्री रामप्रसादजी शर्मा

31 मई

श्रद्धावनत- श्रीमती प्रेमलता शर्मा,
श्रीमती आशा-रमेशचन्द्र शर्मा, श्रीमती नीलम-डॉ.राजेन्द्र शर्मा,
श्रीमती दीक्षा-अश्विन शर्मा, श्रीमती अलका-हितेन्द्रजी नागर,
श्रीमती पूजा-सर्वज्ञजी पुराणिक, आस्था, हार्दिक वेदार्थ
एवं समस्त शर्मा परिवार।

पंचम पुण्य स्मरण

सुमित्रा शर्मा

25 मई 2016

माँ तो माँ है..

मैंने देखा तुम मुस्कुरा रही हो
देख रही हो हर वोरस्म
जो तुम्हारी सांसों के
जाने के साथ
ही शुरु हो गयी थी
समझ तो तुम भी गयी थीं
अब ज्यादा देर तुम्हें इस
घर में नहीं टिका सकेंगे
हम
अंतिम संस्कार के बहाने
बरसों से जुड़ा ये नाता
कुछ पल से ज्यादा नहीं सहा
जाएगा
कुछ देर तक
दूर से आने वालों का इंतजार
अंतिम दर्शन
फिर चार कन्धों की सवारी
समय के बंधन में बंधे
सौंप आएंगे तुझे अग्नि के
हवाले
तेरे शरीर के पूर्णतः चले
जाने का
इंतजार भी न कर सकेंगे
जिंदगी लौट आएगी धीरे–धीरे
पुरानी रफ्तार पे
मुझे पता है
तुम तब भी मुस्कुरा रही होगी
माँ तुझे सलाम

शर्मा परिवार, राऊ
जोशी परिवार, राऊ
मिश्रा परिवार, भीकनगाँव
नागर परिवार, नलखेड़ा
दुबे परिवार, बोरिया
दीक्षित, त्रिवेदी, रावल,
भट्ट परिवार, खजराना
फोन 9300096973

MPHIN/2007/19763 जय हाटकेश वाणी डाक पंजीयन RO/IDC/42/2016-18

Happy Birth Day

Kavya
7 May

Rudraksh
7 May

Jha Family
Indore-Kolkata

Chandrshri Bhawan, Janki Nagar,
Indore Mob.: 9826046013

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा चैतन्य लोक प्रिंटर्स,
20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यहीं से प्रकाशित
सम्पादक : सौ. संगीता शर्मा (36) मो. 94250 63129
LATE POSTING